WESTERN LITERARY THOUGHTS

Study material

VI SEMESTER

B.A HINDI

CORE COURSE
(2011 ADMISSION)

UNIVERSITY OF CALICUT
SCHOOL OF DISTANCE EDUCATION
THENJIPALAM, CALICUT UNIVERSITY P.O., MALAPPURAM, KERALA - 693 635

184

UNIVERSITY OF CALICUT
SCHOOL OF DISTANCE EDUCATION

Study material

VI SEMESTER

B.A HINDI

CORE COURSE
WESTERN LITERARY THOUGHTS

Prepared by

DR. A.K. BINDHU
ASST. PROFESSOR
P.G DEPARTMENT OF HINDI & RESEARCH CENTRE
GOVT. ARTS & SCIENCE COLLEGE
KOZHIKODE

Scrutinised by :

Dr. PAVOOR SASHEENDRAN (Retd.)
38/1294, APPUGHAR,
EDAKKAD P.O.,
CALICUT

Type settings & Lay out
Computer Section, SDE

©
Reserved

SIXTH SEMESTER B.A HINDI
WESTERN LITERARY THOUGHTS

Module I

Western Literary Thoughts: Plato on Art and Literature - Theories of Aristotle - Theories of imitation and catharsis – Longinus.

Module II

Literary thoughts of Wordsworth, Coleridge – Romanticism

Module III

Theories of Benedito Croche, I.A. Richards and T.S. Iliot

Module IV

Classicism – Neo Classicism – Marxian theory of Literature – New criticism – Post Modernism – Structuralism, De construction

Reference Books

1. पाश्चात्य काव्य शास्त्र अधुनातन संदर्भ - सत्यदेव मिश्र
2. पाश्चात्य साहित्य - चिंतन - निर्मला जैन, कुसुम बाँठिया
3. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य शास्त्र की रूपरेखा - रामचंद्र तिवारी
4. सुबोध काव्यशास्त्र (भारतीय एवं पाश्चात्य) - डॉ. जालिंदर इंगले
5. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन - डॉ. बच्चनसिंह
6. भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र - डॉ. अर्चना श्रीवास्तव

1 Weightage Questions

प्र. पाश्चात्य काव्य चिंतन का श्रीगणेश कहाँ हुआ?

उ. यूनान में

प्र. यूनानी आलोचना परंपरा की महत्वपूर्ण कडियाँ कौन-कौन हैं?

उ. प्लेटो, अरस्तु, लोंगिनुस (लोंजाइनस)

प्र. यूनान का प्रथम महाकवि कौन थे? उनकी रचनाएँ क्या-क्या हैं?

उ. होमर, इलियड और ओडिसी उनकी रचनाएँ हैं।

प्र. होमर के आविर्भाव से लोंगिनुस के समय तक साहित्य और आलोचना के क्षेत्र में चर्चित प्रतिभाएँ?

उ. हैसियड, पिंडार, गार्ज़ियास, एरिस्टोफेनीज़, सुकरात, इस्किलस, सोफोक्लीज़, यूरीपिडस आदि।

प्र. होमर के बाद आनेवाले प्रसिद्ध संबोधनगीत प्रणेता कौन है?

उ. पिंडार

प्र. पिंडार के समकालीन आलोचक कौन थे?

उ. गार्ज़ियास

प्र. अरिस्टोफेनीज़ का हास्य नाटक?

उ. फ्राग्स

प्र. पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांतों का प्रथम विश्लेषणात्मक अध्ययन किसने किया?

उ. महान् दार्शनिक प्लेटों ने प्रस्तुत किया।

प्र. प्लेटो किसके शिष्य थे?

उ. सुकरात के

प्र. प्लेटो का जन्म कहाँ हुआ था?

उ. एथन्स के एक प्रतिष्ठित कुल में

प्र. विद्यापीठ की स्थापना प्लेटो ने कब की? वहाँ किस प्रकार की शिक्षा दी जाती थी?

उ. लगभग 387 ई पू. में उन्होंने एक विद्यापीठ की स्थापना की, जहाँ उनके निर्देशन में दर्शन-शास्त्र, गणित, प्राकृतिक विज्ञान, न्याय और विधि संबन्धी शिक्षा दी जाती थी।

प्र. विद्यापीठ के तत्वावधान में प्लेटो ने किन-किन ग्रंथों की रचना की?

उ. सिम्पोसियम (विचारगोष्ठी), फीड़ो, फीड्स, गणतंत्र आदि

प्र. प्लेटो की दृष्टि में किस प्रकार का काव्य क्षेष्ठ है?

उ. परम सत्य की ओर ले जानेवाली सर्जना उनकी दृष्टि में श्रेष्ठ और सफल है। जीवन के सही आदर्श को प्राप्त करने में जो काव्य सहायक सिद्ध होता है, वही काव्य प्लेटो की दृष्टि में श्रेष्ठ है।

प्र. प्लेटो के काव्य संबन्धी विचारों को किन-किन बातों से जोडकर देखा जा सकता है?

उ. काव्य की प्रेरणा, काव्य का विषय, काव्य का प्रभाव

प्र. विक्षुब्धता की स्थिति में काव्य सृजन होने के बारे में प्लेटो का मत?

उ. विक्षुब्धता की स्थिति में मनोवेग अत्यंत प्रबल होते हैं और विवेक और संयम की स्थिति से उनका कोई संबन्ध नहीं होता। ऐसी हालत में होनेवाली सर्जना आदर्शहीन और विवेकहीन हो जाती है। अतः ध्यान और दर्शन के विरोधी हो सकती है।

प्र. किन-किन प्रतिमानों को निर्णायक मानते हुए प्लेटो कविता में दोष अधिक दिखाई दिये?

उ. व्यष्टि और समीष्ट कल्याण।

प्र. प्लेटो के संपूर्ण चिंतन का मुख्य उद्देश्य क्या है?

उ. आदर्श राज्य निर्माण।

प्र. प्लेटो ने काव्य सत्य पर क्या आरोप लगाया है?

उ. वास्तविक सत्य से दुगुना दूर होता है।

प्र. किस प्रकार के काव्य को प्लेटो उपयोगी मानते थे?

उ. कवि एक अच्छे शिक्षक की भाँति व्यक्ति और समुदाय के उन्नयन में निर्णायक भाग लेनेवाली काव्य रचना करे तो ऐसे आदर्श काव्य को प्लेटो उपयोगी मानते थे।

प्र. प्लेटो की कविता के अवशेष कहाँ संकलित है?

उ. ऑक्सफोर्ड बुक आफ ग्रीक वर्स में संकलित है।

प्र. कला के संदर्भ में किस शब्द का प्रयोग प्लेटो ने किया?

उ. माइमेसिस

प्र. माइमेसिस का अर्थ क्या है?

उ. अनुकरण

प्र. प्लेटो ने अनुकरण शब्द का प्रयोग किन-किन संदर्भों में किया?

उ. विचार जगत् और गोचर जगत् के बीच संबन्ध की व्याख्या केलिए और वास्तविक जगत् और कला जगत् के बीच संबन्ध निरूपण केलिए।

प्र. यूनानी भाषा में अरस्तू का वास्तविक नाम?

उ. अरिस्तोतेलेस

प्र. अरस्तू का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उ. ई. पू. 384 में स्तगिरा नगर में हुआ था।

प्र. प्लेटो ने अरस्तू को क्या विशेषण दिया?

उ. विद्यापीठ का मस्तिष्क

प्र. अरस्तू की रचना किन-किन विषयों पर आधारित थी?

उ. तर्कशास्त्र, मनोविज्ञान, भौतिक विज्ञान, साहित्यशास्त्र आदि।

प्र. साहित्यशास्त्र पर आधारित अरस्तू की दो पुस्तकें?

उ. अलंकार शास्त्र (Rhetoric) और काव्यशास्त्र (Poetics)

प्र. 'विरेचन' शब्द का अर्थ क्या है?

उ. विरेचन यूनानी वैद्यशास्त्र का शब्द है, जिसका अर्थ है औषधि द्वारा उदर विकारों की शुद्धी करना।

प्र. अरस्तू के अनुसार काव्य रचना किन-किन कारणों से होती है?

उ. दो कारणों से होती है। मनुष्य की अनुकरण की प्रवृत्ति और अनुकरणात्मक कार्यों और रचनाओं में मनुष्य की अभिरुचि।

प्र. प्रतीयमान रूप से क्या तात्पर्य है?

उ. इसमें अनुकरण की यांत्रिकता का आरोप लगाया जा सकता है।

प्र. अरस्तू की दृष्टि में काव्य का उद्देश्य क्या है?

उ. आनंद प्रदान करना एवं अपने ढंग से उपदेश देना है।

प्र. किसने लोंजाइनस को प्रथम स्वच्छन्दतावादी आलोचक माना है?

उ. स्कॉट जेम्स

प्र. लोंगिनुस किस सिद्धांत के प्रणेता थे?

उ. औदात्य सिद्धांत

प्र. 'पेरिइप्सूस' किसकी रचना है?

उ. लोंगिनुस

प्र. 'पेरिइप्सूस' में लोंजाइनस ने कितने भागों में अपने सिद्धांतों को स्पष्ट किया है?

उ. 2 भागों में। प्रथम भाग में उदात्त शैली का विवेचन है और द्वितीय भाग में कला के आधारभूत तत्वों पर प्रकाश डाला गया है।

प्र. लोंजाइनस किसके आत्मवाद से प्रेरित थे?

उ. प्लेटो के आत्मवाद से

प्र. लोंजाइनस ने काव्य में किस तत्व का प्रतिपादन किया?

उ. काव्य में उदात्त तत्व

प्र. उदात्त की व्याख्या लोंजाइनस ने किस प्रकार किया?

उ. औदात्य अभिव्यक्ति की विशिष्टता और उत्कृष्टता को कहते हैं।

प्र. उदात्त के कितने तत्व होते हैं?

उ. पाँच। उदात्त विचार, गंभीर आवेग, समुचित अलंकार योजना, उदात्त भाषा, गरिमामयी रचना विधान।

प्र. श्रेष्ठ काव्य के बारे में लोंजाइनस की राय क्या है?

उ. श्रेष्ठ काव्य पाठक को अपने निजत्व से ऊपर उठाता है।

प्र. विक्टर हयूगो ने स्वच्छन्दतावाद को क्या कहा?

उ. साहित्यिक उदारवादिता

प्र. 'लिरिकल बैलड्स' पर कठोर प्रहार करनेवाली पत्रिकायें?

उ. एडिनबर्ग (Edinburgh) और क्वार्टरली (Quarterly)

प्र. वर्डसवर्थ का पहला संग्रह कौन सा है?

उ. ऐन ईवनिंग वॉक ऐंड डिस्क्रिट्टिव स्केचैज़ (An Evening walk and Discriptive sketches)

प्र. वर्डसवर्थ के आत्मकथात्मक काव्य?

उ. द प्रिल्यूड

प्र. सन् 1843 में वर्डसवर्थ को किस पद से सम्मानित किया गया?

उ. इंग्लौण्ड के पोयट लॉरिएट

प्र. स्वच्छन्दतावादी कवियों का नाम?

उ. वर्डसवर्थ, कॉलरिज, कीट्स, शेली, बायरन आदि।

प्र. स्वच्छन्दतावादी दृष्टि के अनुसार काव्य के तीन तत्व क्या-क्या है?

उ. → रूप की दृष्टि से त्रासदी के स्थान पर गीतिकाव्य क प्रतिष्ठा हुई।

→ कथावस्तु के स्थान पर भाव, आवेग, अनुभूति आदि की श्रेष्ठता प्रतिपादित की गई।

→ शिल्प के संदर्भ में बिंब को अधिक महत्व माना गया।

प्र. रूमानी युग के प्रवर्तक कवि और आलोचक कौन है?

उ. विलियम वड्सवर्थ

प्र. 'लिरिकल बैलड्स' की भूमिका किसने लिखी?

उ. 1800 में प्रकाशित लिरिकल बैलड्स की भूमिका वर्ड्सवर्थ द्वारा स्वरचित थी, परन्तु 1802 और 1815 की भूमिकाओं में वर्डसवर्थ ने अपने मित्र कॉलरिज द्वारा लिखी हुई टिप्पणियों को भी जोडकर लिया था।

प्र. भावमूलक मानवतावाद से क्या तात्पर्य है?

उ. मानव मात्र की भावना पर आधारित यह मानवतावादी दृष्टि भावमूलक मानवतावाद है।

प्र. सेमुअल टेलर कॉलरिज किस प्रकार के कवि-आलोचक थे?

उ. पाश्चात्य काव्यशास्त्र के इतिहास में सहजात प्रतिभा के धनी, सूक्ष्मदर्शी एवं आध्यात्मिक अंर्न्तदृष्टि संपन्न कवि-आलोचक थे कॉलरिज।

प्र. कॉलरिज के साहित्यिक आलोचना का केन्द्र क्या है।

उ. दर्शनशास्त्र है। उनकी आलोचना का केन्द्र बिन्दु सर्जक की सृजन-प्रक्रिया का विश्लेषण-विवेचन करना है।

प्र. कॉलरिज के किस ग्रंथ में साहित्य संबन्धी विवेचन मिलता है?

उ. बयोग्राफिया लिटरेरिया (Biographia Literaria)

प्र. कॉलरिज की प्रमुख रचनाएँ?

उ. लेक्चर्स ऑन शेक्सपियर (Lectures on Shakespeare), द फ्रेंड (The friend), द टेबल टाल्क (The table talk), लेटर्स (Letters)

प्र. कॉलरिज की मृत्यूपरान्त रचना?

उ. एनिमा पाइतेइ (Anima poetae)

प्र. कॉलरिज किन-किन विचारकों से प्रभावित थे?

उ. कांट, शिलर, श्लेगल, शेलिंग, गेटे आदि विचारकों से प्रभावित थे।

प्र. कॉलरिज की दृष्टि में उत्कृष्ट काव्य के गुण क्या-क्या है?

उ. छन्द, कथ्य से तटस्थता, प्रधान भाव, कविता और दर्शन।

प्र. अभिव्यंजनावाद के उपज्ञाता कौन है?

उ. बेनेदेतो क्रोचे ने साहित्य-कला के क्षेत्र में अभिव्यंजनावाद का प्रवर्तन किया।

प्र. कविता और साहित्य संबन्धी क्रोचे की मन्यताएँ कहाँ व्यक्त हुई है?

उ. ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में कविता पर दिये गये प्रसिद्ध भाषण 'डिफेंस ऑफ पोएट्री' में कविता और साहित्य संबन्धी इनकी मान्यताएँ व्यक्त हुई है।

प्र. क्रोचे की सर्वाधिक ख्याति प्राप्त कृति कौन सा है?

उ. प्रख्यात इतालियन दार्शनिक बेनेदेतो क्रोचे की सर्वाधिक प्रसिद्ध कृति 'फिलॉसफी ऑफ द स्पिरिट' है।

प्र. 'फिलॉसफी ऑफ द स्पिरिट' के कितने खंड हैं?

उ. चार खंड हैं- एस्थैटिक्स, लॉजिक, फिलॉसफी ऑफ कॉण्डक्ट और थ्योरी एन्ड हिस्ट्री ऑफ हिस्टोरियोग्राफी।

प्र. किन-किन पत्रिकाओं में क्रोचे ने मृत्युपर्यन्त लेख लिखे?

उ. 'लाक्रितिका' (Lacritica) तथा क्वादरनी दैला 'क्रितिका' पत्रिकाओं में 1903 के बाद मृत्युपर्यन्त लेख लिखे।

प्र. क्रोचे का सौंदर्य शास्त्रीय विवेचन किस पुस्तक में उपलब्ध है?

उ. एस्थैटिका में उपलब्ध है।

प्र. कला सृजन केलिए क्रोचे कलाकार से किन-किन अपेक्षाएँ रखते हैं?

उ. 4 अपेक्षाएँ रखते हैं। सजग इच्छा शक्ति, कला-सृजन के विभिन्न माध्यमों अथवा साधनों का ज्ञान, कलात्मक चितंन तथा पर्याप्त कल्पनाशक्ति आवश्यक मानते हैं।

प्र. अभिव्यंजना के कितने स्तरों का उल्लेख क्रोचे ने किया है?

उ. चार स्तरों का। अंतः संस्कार अथवा आत्म संवेदन (impression), अभिव्यंजना (expression) , आनुषंगिक आनंद और अभिव्यक्ति।

प्र. आधुनिक युग में कितने आलोचनात्मक धाराओं का विकास हो रहा था?

उ. 4 प्रकार की। विश्लेषणात्मक आलोचना, मनोवैज्ञानिक आलोचना, समाज वैज्ञानिक आलोचना और अभिव्यंजनावादी आलोचना।

प्र. विश्लेषणात्मक आलोचना का प्रवर्तक?

उ. टी. एस. इलियट

प्र. मनोवैज्ञानिक आलोचना का प्रवर्तन किसने किया?

उ. ऐ. ए. रिचार्डस् ने।

प्र. ऐ. ए. रिचार्डस् के प्रमुख ग्रंथ?

उ. काव्यालोचन के सिद्धांत (Principles of literary criticism) तथा व्यावहारिक आलोचना (Practical criticism)।

प्र. रिचार्डस् ने मुख्य रूप से किन-किन समस्याओं पर विचार किया?

उ. काव्य के मनोवैज्ञानिक प्रभाव की मूल्यपरकता और काव्य भाषा की प्रकृति की पहचान।

प्र. रिचार्डस् के अनुसार साहित्यालोचना का सिद्धांत कितने स्तंभों पर केन्द्रित है?

उ. दो स्तंभों पर। मूल्य का लेखा जोखा और संप्रेषणीलता का आकलन।

प्र. रिचार्डस् की समीक्षा पद्धति को मनोवैज्ञानिक विश्लेषणात्मक क्यों कहा जा सकता है?

उ. साहित्य के रहस्यों को उद्घाटित करनेवाली विज्ञान मनोविज्ञान है। अर्थात् साहित्यालोचन केलिए रिचार्डस् मनोविज्ञान संबन्धी ज्ञान को अनिवार्य मानते हैं।

प्र. रिचार्डस् के सर्वाधिक उल्लेखनीय अनुयायी कौन है?

उ. विलियम एम्पसन

प्र. रिचार्डस् ने किस पुस्तक में साहित्यिक अस्पष्टता को भाषा की एक मूलभूत विशेषता माना है?

उ. Philosophy of Rhetoric

प्र. रिचार्डस् किसे साधारण मूल्यों का सिद्धांत कहते हैं?

उ. कला को

प्र. रिचार्डस् के अनुसार काव्य प्रयोजन क्या हैं?

उ. मनोभावों को सुव्यवस्थित करना है।

प्र. रिचार्डस् अर्थ के कितने प्रकार मानते हैं?

उ. 4 प्रकार। वाच्यार्थ (sense), भाव (feeling), स्वर अथवा लहजा (tone) और अभिप्राय (intention)

प्र. रिचार्डस् की दृष्टि में काव्य की भाषा किस प्रकार की होती है?

उ. रागात्मक होती है, तथ्यात्मक नहीं।

प्र. रिचार्डस् ने कविताओं का उल्लेख कैसे किया?

उ. 2 प्रकार से- अपवर्जी काव्य(Poetry of exclusion) और अंतर्वंशी काव्य (Poetry of inclusion)

प्र. अपवर्जी काव्य से तात्पर्य क्या है?

उ. एकीभाव प्रधान प्रेम कविताएँ इसमें रखी जा सकती है।

प्र. अंतर्वंशी काव्य क्या है?

उ. विरोधी वृत्तियों एवं भावानुभूतियों को समज्जित करके प्रस्तुत किया जाता है तो वह अंतर्वंशी काव्य कहलाता है।

प्र. अंग्रेज़ी के आधुनिक साहित्यकारों में किसका स्थान महत्वपूर्ण है?

उ. अमेरिका में जन्मे अंग्रेज़ी कवि, नाटककार, पत्रकार, साहित्य सिद्धांतकार एवं समालोचक टी. एस. इलियट का स्थान महत्वपूर्ण है।

प्र. किस पत्रिका के सहकारी संपादन का कार्य टी.एस. इलियट ने किया?

उ. ब्रिटीश साहित्यिक पत्रिका ईगोइस्ट का

प्र. टी. एस. इलियट द्वारा स्थापित पत्रिका का नाम?

उ. 1922 में त्रैमासिक समीक्षा पत्रिका क्राइटेरियन की स्थापना की।

प्र. टी. एस. इलियट किस प्रकाशन संस्थान के निदेशक थे?

उ. फेबर ऐंड फेंबर

प्र. किस वर्ष टी.एस इलियट को साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला? कौन सा उपाधि हासिल की?

उ. सन् 1948 में उन्हें साहित्य का नोबेल पुरस्कार और ब्रिटिश 'ऑर्डर ऑफ मेरिट' (ओ. एम) की उपाधि मिली।

प्र. इलियट की प्रसिद्ध काव्य रचनाएँ?

उ. द लव साँग ऑफ एलफ़र्ड प्रूफ़ॉक (1915), द वेस्ट लैंड (1922), फोर कवार्ट्रेट्स (1943)

प्र. इलियट के प्रसिद्ध नाटकें?

उ. मर्डर इन द कैथिड्रल (1935), द फेमिली रियूनियन (1939), द कॉकटेल पार्टी (1950)

प्र. इलियट के समीक्षात्मक ग्रंथ?

उ. 'द सेक्रेड वुड' (1920), 'होमज टु जॉन ड्राइडन' (1924), 'एलिज़ाबेथेन एसेज़' (1932), 'द यूज़ ऑफ पोएट्री एंड द यूज़ ऑफ क्रिटिसिज़्म' (1933), 'सेलेक्टड एसेज़' (1934), और 'एसेज़ एन्शेंट ऐंड मॉडर्न' (1936) विशेष प्रसिद्ध हुई।

प्र. किन-किन कवियों पर इलियट ने लेख लिखे हैं?

उ. दाँते, शेक्सपीयर, मिल्टन, ड्राइडन, वर्डसवर्थ, कॉलरिज एवं मेटाफिज़िकल कवियों पर लेख लिखे हैं।

प्र. काव्यावधारणा से संबन्धित इलियट की दो प्रमुख वाक्यांश क्या है?

उ. वस्तुनिष्ठ समीकरण (Objective correlative) एवं भाव-बोध वियोजन (Dissociation of sensibility)

प्र. 'मेटाफिज़िकल पोयट्स' किसका निबन्ध संग्रह है?

उ. टी. एस इलियट

प्र. क्लासिसिज़्म (classicism) को हिन्दी में किन-किन नामों से अभिहित किया गया है?

उ. शास्त्रवाद, शास्त्रीयवाद, अभिजातवाद, आभिजात्यवाद

प्र. ओलस जेलियस ने किस पुस्तक में दो प्रकार के लेखकों का उल्लेख किया है?

उ. नौकटिस एटिस (Noctes Atticse)

प्र. ओलस जेलियस ने किन-किन लेखकों का उल्लेख किया है?

उ. स्क्रिपटर क्लासीकस (Scriptor classicus) और स्क्रिपटर प्रोलेतेरिउस (Scriptor prolatarius)

प्र. स्क्रिपटर क्लासीकस से क्या तात्पर्य है?

उ. सुसंस्कृत एवं अभिजातवादी अथवा इलीट सोसाइटी केलिए लिखनेवाला आभिजातवादी लेखक।

प्र. स्क्रिपटर प्रोलेतोरिउस में किस प्रकार के लेखक हैं?

उ. जन साधारण एवं असंस्कृत लोगों केलिए लिखनेवाला जनवादी लेखक।

प्र. रोमन साहित्यकारों ने प्राचीन साहित्यकारों के वैभवपूर्ण उदात्त साहित्य को दृष्टि पथ में रखकर किन-किन मान्यताएँ स्थापित की?

उ. → वर्तमानकाल से पूर्ववर्ती साहित्यकार अथवा साहित्य उत्थान के चरम शिखर को स्पर्श कर चुके हैं।

→ अतः वर्तमान साहित्यकार का साहित्यिक दायित्व है कि उन्हीं पूर्ववर्ती साहित्यकारों का अनुसरण करे।

→ इस साहित्यिक अनुकरण में उन प्राचीन कृतियों के नियमों तथा शिल्पानुशासन का पूर्णतः पालन किया जाना चाहिए।

प्र. फ्रांस के अग्रणी अभिजातवादी आलोचक?

उ. ब्वालो

प्र. ब्वालो किसके उत्तराधिकारी थे?

उ. होरेस

प्र. इंग्लण्ड के प्रसिद्ध अभिजातवादी आलोचक कौन कौन है?

उ. सर फिलिप सिडनी तथा बेनजॉनसन

प्र. शास्त्रवाद को परिभाषित करनेवाले पाश्चात्य विद्वान?

उ. गेयथे, शिलर, ग्रियर्सन, मैथ्यु आर्नल्ड आदि।

प्र. नवशास्त्रवादी युग में साहित्यालोचन का केन्द्र कहाँ था?

उ. (रोम न होकर) फ्रांस था।

प्र. प्राचीन शास्त्रवादी साहित्यकारों के साहित्य सिद्धांतों को आदर्श मानकर साहित्य लेखन केलिए नियम प्रस्तुत करनेवाले कौन-कौन है?

उ. कोरनील, रेसाइन, ब्वालो, ला बोस्यू आदि।

प्र. नवशास्त्रवाद के प्रतिष्ठाता कौन है?

उ. ब्वालो

प्र. नवशास्त्रवाद को क्यों छद्मशास्त्रवाद की संज्ञा दी?

उ. प्राचीन साहित्य सिद्धांतों के पुनस्थापन में तथा शास्त्रवादियों की साहित्यात्मा के पुनरनुभव में जब-जब साहित्यकारों को पूर्णतः सफलता प्राप्त हुई है तब ये साहित्यकार नवशास्त्रवादी कहलाये हैं और असफल अथवा अंशतः सफल रहे हैं, तब छद्म शास्त्रवादी कहलाये हैं।

प्र. मार्क्सवादी चिंतन के क्षेत्र में किन-किन लोगों का नाम उल्लेखनीय है?

उ. मार्क्स एवं ऐंगिल्स, लेनिन, गोर्की, जार्जलुकाच, फाक्स आदि।

प्र. सिद्धांत निर्माता कौन थे?

उ. कार्ल मार्क्स

प्र. सिद्धांत के विश्वस्त व्याख्याता एवं प्रचारक कौन थे?

उ. ऐंगिल्स

प्र. मार्क्स की प्रमुख रचनाएँ?

उ. द पावर्टी ऑफ फिलासफी-1847, द कम्यूनिस्ट मेनिफेस्टो-1848, द क्रिटिक ऑफ पॉलिटिकल इकनामी-1859, दास केपिटल-1867, वेल्यू, प्राइस एण्ड प्राफिट- 1865, द सिविल वार इन फ्रान्स- 1870-71 आदि।

प्र. मार्क्स का साहित्य मुख्यतः किससे संबन्धित है?

उ. सामाजिक- आर्थिक समस्याओं से संबन्धित है।

प्र. मार्क्स की विचारधारा कितने भागों में विभाजित किया जा सकता है?

उ. → द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद (Dialectical Materialism)
→ ऐतिहासिक भौतिकवाद (Materialistic Interpretation of History)
→ वर्ग संघर्ष का सिद्धांत (Theory of Class Struggle)
→ अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत (Theory of Surplus Value)

प्र. नयी समीक्षा कहाँ और कब प्रतिष्ठित हो गई थी?

उ. अमेरिका में बीसवीं शती के प्रथम चरण में ही प्रतिष्ठित हो गई थी।

प्र. नई आलोचना के अग्रदूत कौन है?

उ. सन् 1910 में कोलम्बिया विश्वविद्यालय में किये गये 'नई आलोचना' शीर्षक भाषण था।

प्र. नयी समीक्षा को पूर्णतः किसने प्रतिष्ठित किया?

उ. जॉन क्रो रेनसम

प्र. जॉन क्रो रेनसम किससे नयी समीक्षा की शुरुआत मानते हैं?

उ. आइ. ए. रिचर्डस् से

प्र. प्रमुख नये समीक्षक?

उ. एलेन टेट, राबर्ट पेन वॉरेन, आर पी ब्लैकमर, आइवर विंटर्स, क्लीथ बुक्स आदि।

प्र. नये समीक्षकों का विरोध किसने किया?

उ. 'शिकागो स्कूल' के आलोचकों ने आर.एम. क्रेन के नेतृत्व में नये समीक्षकों का विरोध किया।

प्र. अंग्रेज़ी के Post Modernism का शब्दिक रूपांतर क्या है?

उ. उत्तर आधुनिकतावाद

प्र. 'उत्तर आधुनिकता' पदबन्ध किसने कला के संदर्भ में प्रयोग किया?

उ. जॉनबार्थ ने सन् 1967 में कला के संदर्भ में प्रयोग किया।

प्र. किन-किन विद्वानों ने उत्तराधुनिकता संबन्धी अवधारणा की आधार शिला रखी?

उ. सन् 1974 में पीटर बर्जर तथा ल्योतार ने 1979 में अपने ग्रंथ The Post Modern Condition: A Report on Knowledge, फ्रेडरिक जेमेसन ने अपनी कृतियों 'Post Modernism', The Cultural Logic of Late Capitalism आदि में इस अवधारणा की आधारशिला रखी।

प्र. किसने आधुनिकतावाद से महावृत्तांतों का संबन्ध माना है?

उ. ल्योतार ने

प्र. उत्तर आधुनिकता का उन्मेष सर्वप्रथम किस क्षेत्र में हुआ?

उ. वास्तुकला के क्षेत्र में

प्र. अंतर्राष्ट्रीय शैली 'निगेशन' विरोध किन-किन व्यक्तियों ने किया?

उ. रॉबर्ट बेंतुरी और जेम्स स्टर्लिंग

प्र. संरचनावाद की अवधारणा का मूल स्रोत क्या है?

उ. सस्सूर द्वारा प्रतिपादित भाषा सिद्धांत है।

प्र. संरचना संबंन्धी अवधारणा किन-किन तत्वों में समाहित है?

उ. अखण्डता, प्रयोजन और स्वायत्तता में

प्र. सस्सूर के अनुसार भाषा के कितने भेद है?

उ. 2 भेद है। परोल (ल परोल) और लैंगुई (ल लांग)

प्र. ल लांग क्या है?

उ. अन्तर्वेयक्तिक भाषा व्यवस्था

प्र. ल परोल से क्या तात्पर्य है?

उ. व्यक्ति-विशेष की भाषा

प्र. अधुनातन संरचनावादियों में समाजशास्त्री नृतत्वविज्ञानी कौन-कौन है?

उ. क्लॉड स्ट्रास और रोलाँ बार्थ

प्र. रोलाँ बार्थ द्वारा रचित संरचनावाद के सूत्र संबन्धी पुस्तक?

उ. द फैशन सिस्टम

प्र. विखंडन किस पर आधारित प्रक्रिया है?

उ. पाठ पर आधारित है।

प्र. विखंडनवाद का प्रवर्तक कौन है?

उ. जेकुस देरिदा

2 Weightage Questions

प्र. प्लेटो पूर्व के काव्य चिंतन के सिद्धांतों का परिचय दीजिए।

उ. पाश्चात्य काव्य चिंतन का श्रीगणेश यूनान में हुआ। यूनानी आलोचना की एक सुदीर्घ परंपरा रही है और इस परंपरा की महत्वपूर्ण कडियाँ हैं- प्लेटो, अरस्तु, लोंजाइनस आदि। आठवीं शती ईं पुर्व होमर के आविर्भाव से लेकर तीसरी शती ईं. पूर्व लोंजाइनस के आविर्भाव तक लगभग 500 वर्ष की अवधि में अनेक ऐसे आलोचक और कवि आलोचक हुए हैं साहित्य और आलोचना के क्षेत्र में उनकी देन महत्वपूर्ण है। होमर के उपरान्त हैसियड, पिंडार, गार्ज़ियास, एरिस्टोफेनीज़, सुकरात, आइसाक्रेटीज़, सोफोक्लीज़, यूरीपिडस, थियोफेस्टस जैसे अमूल्य प्रतिभाओं का योगदान आलोचनाशास्त्र केलिए गुणात्मक और विशिष्ट है। महाकवि होमर के बाद महान् संबोधनगीत प्रणेता पिंडार ने अपने स्फुट वक्तव्यों में काव्य-कला और काव्य रचना प्रक्रिया जैसे महत्वपूर्ण आलोचना तत्वों पर विचार किया है। उनके समकालीन आलोचक गार्ज़ियस ने काव्य परिभाषा और काव्य प्रभाव जैसे गंभीर प्रश्न उठाये हैं। एरिस्टोफेनीज़ ने सर्वप्रथम निर्णयात्मक समीक्षा प्रणाली का प्रणयन किया। उनके समकालीन समीक्षक आइसोक्रेटीज़ ने भाषणशास्त्र पर गंभीर वक्तव्य दिये। इस्किलस, सोफोक्लीज़ तथा यूरीपिडस महान् नाटककार होने के साथ ही उच्चकोटि के नाट्यशास्त्र आलोचक भी थे।

प्र. काव्य संबन्धी प्लेटो के विचार?

उ. प्लेटो के विचारों का आधार सत् और असत् वृत्तियों के समर्थन पर केन्द्रित है। दो प्रकार से उन्होंने काव्य का विचार प्रकट किया है। एक ओर अपने युग में रचित काव्य को आधार बनाकर यह दिखाने का प्रयास किया है कि प्रेरणा, विषय और प्रभाव की दृष्टि से वह कहाँ तक सबका पोषक है। जीवन को कल्याण मार्ग पर अग्रसर करनेवाले काव्य को वे महत्व का आधार मानते हैं। उनके अनुसार होमर आदि द्वारा रचित काव्य को नगर से बहिष्कृत कर देना चाहिए। परन्तु वे ऐसे काव्य को सहर्ष स्वीकार करते हैं जो मनुष्य की सद्वृत्तियों को जगाता है, उन्हें सत्य की ओर प्रेरित करता है और उनके जीवन के अनुशासन, संयम और व्यवस्था को बढ़ावा देता है।

प्र. प्लेटो ने कवियों को नगर में प्रवेश करने से क्यों रोका है?

उ. प्लेटो के अनुसार यदि तुम गीत और महाकाव्य की आनन्दसिद्धा देवी की प्रतिष्ठा करोगे तो विधि एवं सिद्धांत के स्थान पर तुम्हारे नगर में सुख-दुःख शासन करेंगे और समाज में विधि एवं सिद्धांत को भी सर्वथा श्रेष्ठतम स्वीकार किया है। अर्थात किसी भी नगर में उसी कविता को प्रवेश होने दिया जाएगा, जिसमें ईश्वर की स्तुति हों अथवा जिसमें साधुजनों के गुणगान हो। स्पष्ट है कि प्लेटो ने काव्य के ऐसे रूप की चर्चा की है, जो सद्विचारों के पोषक और काम्य हो सकता है। उनका विचार है कि काव्य प्रकृति का अनुकरण है और प्रकृति सत्य का अनुकरण। अतः अनुकरण का अनुकरण होने से वह सत्य का दुगुना दूर हो जाता है। दूसरी बात है कि कविता मनोवेगों को उत्तेजित करती हुई आत्मा को उद्वेलित कर देती है। अतः पार्श्ववृत्तियों का उद्बोध और दिव्य गुणों का शमन करने के कारण कवि की रचना त्याज्य है। इन्हीं कारणों से प्लेटो ने आदर्श राज्य में कवि के प्रवेश का निषेध किया है।

प्र. प्लेटो की दृष्टि में काव्य सत्य से दुगुनी दूर है, क्यों?

उ. 'रिपब्लिक' में प्लेटो कहते हैं कि प्रत्यय अथवा विचार ही आधारभूत सत्य है। वस्तुएँ पहले विचारों के रूप में ही कल्पित होती हैं, फिर व्यवहार्य रूप ग्रहण करती हैं। अतः विचार ही चरम तत्व है। प्रत्येक वस्तु का प्रत्यय ही मूलादर्श है और वस्तु उस मूलादर्श की प्रतिकृति। मूलादर्श ही अंतिम सत्य है। अर्थात् चरम सत्य सर्वोच्च कर्ता के मन में विचार अथवा मूलादर्श के रूप में था। इसी मूलादर्श की प्रतिकृति से बाह्य जगत् में वस्तुओं का प्रतिअंकन कला में कलाकारों द्वारा दिया गया। इस प्रकार कलाकृति प्रतिकृति की प्रतिकृति हुई, अतः सत्य से दुगुनी दूर हुई। उदाहरण केलिए बढ़ई द्वारा निर्मित मेज़ निर्मित न होकर अनुकृत है। विचार रूप में ईश्वर द्वारा निर्मित मेज़ का अनुकरण है।

प्र. काव्य सृजन प्रक्रिया संबन्धी प्लेटो की राय क्या है?

उ. प्लेटो कविता को स्वतः प्रसूत भावोद्गार मानते हैं। उनके अनुसार कभी-कभी कवि की अभिव्यक्ति भी गंभीर सत्य का उद्घाटन करती है। कवि स्वयं और उसका सहज कवि कर्म

सत्य से भ्रमित करनेवाला होता है। इसलिए कविता दर्शन का स्थान नहीं ले सकती। चूँकि कविता मनोवेगों पर आधारित होता है। अतः राष्ट्र की दृढ़ता और उन्नति केलिए कविता अविश्वसनीय है। प्लेटो के सृजन विषयक विचार मुख्यतः 'इओन' नामक संवाद में मिलता है। कवि कर्म किसी वैज्ञानिक पद्धति पर अवलंबित नहीं रहता। प्लेटो के अनुसार कवि में सृजन की क्षमता का प्रादुभवि अलौकिक शक्ति के रूप में होता है। उनके अनुसार कोई भी कवि जब तक बोध शक्ति को धारण करता है तब तक काव्य के देववाणी तुल्य उपहार का अधिकारी नहीं होता।

प्र. प्लेटो ने अनुकरण शब्द का प्रयोग किस अर्थ में किया है?

उ. प्लेटो ने शैली के प्रकार-विशेष केलिए अनुकरण शब्द का प्रयोग किया है। कलाकृतियों में विभिन्न रूपों को स्पष्ट करने केलिए प्लेटो ने कभी अनुकरण के पर्याय रूप में और कभी विकल्प रूप में प्रतिकृति, सादृश्य, रूपक, छायाभास आदि अनेक सजातीय शब्दों का प्रयोग किया है। अनुकार्य विषय के सही ज्ञान के आधार पर किये जानेवाले अनुकरण को वे वैज्ञानिक और विद्वत्तापूर्ण अनुकरण कहते थे और अनुकरण का सत्य किसी वस्तु को गुण और परिमाण के अनुकूल प्रस्तुत करने में निहित मानते थे। प्लेटो के अनुसार सभी अनुकरणधर्मी कलाओं में (वह चित्रकला, संगीत अथवा कोई अन्य कला है) निर्णायक को सही निर्णय केलिए तीन बातों का ज्ञान अनिवार्य है। वे हैं- अनुकरण का विषय क्या है? वह सत्य है अथवा नहीं? तथा उसे शब्द, स्वर और लय के माध्यम से भली-भाँति निष्पादित किया गया है, अथवा नहीं?

प्र. प्लेटो की कला एवं साहित्य संबन्धी प्रमुख धारणाएँ?

उ. कला में मनुष्य और समाज को आकर्षित एवं सम्मोहित करने की अद्‌भुत शक्ति होती है। कला का सही प्रयोग किया जाये तो समाज कल्याण की अन्तः शक्ति भी उसमें विद्यमान है। उनके अनुसार यदि कला का समुचित अनुशीलन किया जाये तो जीवन में जो कुछ भी भव्य है, चरित्र में जो कुछ भी उदात्त है, सौंदर्य में जो कुछ भी प्रेरणा शक्ति है, उन सभी को समग्र रूप में प्राप्त किया जा सकता है। काव्य कला की समाज कल्याणकारक अन्तः शक्ति से प्लेटो पूर्णतः परिचित थे। प्लेटो ने सामान्यतः कला केलिए जो कुछ व्यक्त किया है, उसका उनके प्रत्यय सिद्धांत (Theory of idea) से गहरा संबन्ध है।

प्र. प्लेटो और अरस्तू के अनुकरण सिद्धांत में क्या अंतर है?

उ. प्लेटो ने अनुकरण को एक निम्न कोटि का यांत्रिक व्यापार माना था। अरस्तू ने निर्माण के तथ्य को उससे जोडकर उसे एक सर्गात्मक व्यापार स्थापित किया। अरस्तू के अनुसार अनुकरण की अवधारणा लौकिक अवधारणा है तो प्लेटो इसे दार्शनिक दृष्टि से देखने का प्रयास किया। कवि और इतिहासकार के बीच भेद दिखाते हुए अरस्तू ने यह कहा कि इतिहासकार केवल घटित घटनाओं का लेखक होता है। लेकिन कवि उन घटनाओं का भी

संयोजन करता है, जो घटित हो सकें। इसलिए काव्य में दर्शन तत्व अधिक होता है। इतिहास सत्य का तथ्यपरक ऊपरी रूप प्रकट करता है जबकि काव्य और दर्शन सत्य क सूक्ष्म मीमांसा करते हैं। यहाँ अरस्तू कवि के व्यक्तित्व की सर्जनात्मकता या कल्पना को स्वीकार करते हैं। यह एक परिवर्तित दृष्टि है, जो प्लेटो से मेल नहीं खाती है।

प्र. 'काव्य प्रयोजन' के बारे में अरस्तू का मत क्या है?

उ. अरस्तू अपने गुरु प्लेटो की भाँति काव्य का उद्देश्य मात्र उपदेश या शिक्षा नहीं मानते। उन्होंने काव्य प्रयोजन आनन्द या सुख ही माना है। वे उस काव्य को सर्वश्रेष्ठ मानते हैं, जो आनन्दानुभूति के साथ ही जनसामान्य को चारित्रिक उत्थान की शिक्षा भी दें। अरस्तू के अनुसार समुदाय के उच्चतर जीवन में कला एक मूल तत्व है। कला जो सुख प्रदान करती है, वह स्थायी सुख होता है और कला का सौंदर्यपरक आनंद जनकलायणात्मक प्रयोजन से विच्छिन्न भी नहीं होता। इस प्रकार अरस्तु काव्य प्रयोजन संबन्धी धारणाओं में अंशतः प्लेटो से सहमत थे और अंशतः असहमत।

प्र. अरस्तू काव्य के कितने भेद मानते हैं?

उ. अरस्तू ने काव्य के तीन भेद किये हैं- त्रासदी, कामदी और महाकाव्य। उनके अनुसार जिस नाट्य कृति का विषय यथार्थ से श्रेष्ठ होता है और जिसमें करुणा और त्रास की व्याख्या होती है वह त्रासदी कहलाती है। जिस नाट्य कृति का विषय यथार्थ से निकृष्ट होता है तथा जिसमें हास्य की प्रधानता होती है वह कामदी कहलाती है। यह प्रायः हास्य व्यंग्य प्रधान होता है। इसमें जीवन की दुःखद और संकटपूर्ण परिस्थितियों का प्रदर्शन न होकर सुखमय हास्यजनक उल्लासमय दृश्यों का प्रदर्शन होता है। त्रासदी के समान महाकाव्य का विषय भी गंभीर एवं श्रेष्ठ होता है। यह जीवन का अनुकरण है। इसमें अभिनय और प्रदर्शन की आवश्यकता नहीं है। इसलिए महाकाव्य त्रासदी से भिन्न होता है।

प्र. 'त्रासदी' पर विचार कीजिए।

उ. पश्चिमी काव्य चिंतन का केंद्रीय आधार त्रासदी है। त्रासदी किसी गंभीर स्वतः पूर्ण तथा निश्चित आयाम से युक्त कार्य की अनुकृति का नाम है। इसका माध्यम नाटक के भिन्न-भिन्न भागों में भिन्न-भिन्न रूप से प्रयुक्त सभी प्रकार के आभरणों से अलंकृत भाषा होती है, जो समाख्यान के रूप में न होकर कार्य व्यापार के रूप में होती है। इसमें करुणा तथा त्रास के उद्रेक द्वारा मनोविकारों का उचित विरेचन किया जाता है। अरस्तु ने त्रासदी के 6 तत्व मोन हैं। कथानक (plot), चरित्र (character), पदावली (diction), विचार (thought), दृश्यविधान (spectacle) और गीत (song)। इनमें कथानक और चरित्र अनुकरण के माध्यम होते हैं। दृश्यविधान, विचार तत्व और गत अनुकरण के विषय है और पदावली अनुकरण की विधि है।

प्र. कथावस्तु संबन्धी अरस्तू की मान्याताएँ।

उ. त्रासदी के 6 तत्वों में अरस्तू ने कथावस्तु को प्रमुख तत्व माना है। यह त्रासदी की आत्मा है। क्योंकि अन्य सभी तत्व कथावस्तु पर आधारित है। उनके अनुसार कथा के 3 आधार हो सकते हैं। लोककथा, कल्पित कथा और इतिहास। उन्होंने कथावस्तु में कार्य, जीवन और घटनातत्व पर विशेष बल दिया। कथा की संभाव्यता और स्वाभाविकता पर अरस्तु ने ज़ोर दिया। उनके अनुसार कथानक के सभी कार्य और सभी गौण घटनाएँ परस्पर संबन्ध होनी चाहिए। त्रासदी के सबसे प्रबल रागात्मक तत्व स्थिति विपर्यय अथवा अभिज्ञान भी कथानक का ही अंग होता है। स्थिति विपर्यय से जन्म देनेवाली घटनाओं से पाठक की जिज्ञासा बढ़ती है। 'ईडिपस' में दूत ईडिपस का उत्साहवर्धन करने तथा उसे माता संबन्धी शंकाओं से मुक्त करने केलिए आता है, किंतु साथ ही वह ईडिपस के जीवन रहस्य का उद्‌घाटन भी कर देता है जिससे सर्वथा प्रतिकूल प्रभाव उत्पन्न हो जाता है। कथावस्तु की संरचनागत विशेषताओं में अरस्तू ने अन्विति पर विशेष बल दिया। अर्थात् कार्य व्यापार का ऐक्य। कथानक के विकास में सहजता और कुतूहल दोनों को अरस्तू अनिवार्य मानते थे।

प्र. चरित्र संबन्धी अरस्तू का दृष्टिकोण।

उ. चरित्र-चित्रण का मूल आधार अरस्तू ने पात्रों के चारित्रय को स्वीकार किया। भद्र चरित्र पर उन्होंने बल दिया। यदि उद्देश्य भद्र है तो चरित्र भी भद्र होगा। चरित्र का दूसरा गुण उनकी दृष्टि में औचित्य है। यथार्थता और जीवन के प्रति सच्चाई स्वीकार करना चरित्र की तीसरी विशेषता है। चरित्र-चित्रण केलिए अरस्तू ने चित्रकला को आदर्श माना। सफल त्रासदी के चरित्रों का विकास और उनके कार्य-कलाप महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि त्रास और करुणा की भावों को जगाने की शक्ति चरित्रों में होनी चाहिए। अभिनय की सफलता के माध्यम से इसकी प्रप्ति होती है।

प्र. उदात्त के संबन्ध में लोंजाइनस का मत क्या है?

उ. काव्य में उदात्त तत्व की महत्ता पर सबसे पहले व्यवस्थित रूप में विचार करनेवाले आचार्य थे लोंगिनुस। उदात्त की व्याख्या उन्होंने कम शब्दों में की है- 'औदात्य अभिव्यक्ति की विशिष्टता और उत्कृष्टता को कहते हैं।' (Sublimity is a certain distinction and excellence in expression) उदात्त के प्रभाव पर विचार करके उन्होंने बताया कि उदात्त भाषा का प्रभाव श्रोता के मन पर प्रत्यय के रूप में नहीं पडता, वरन् भावों के रूप में पडता है। यह प्रभाव अत्यंत प्रबल और दुर्विवाद होता है और प्रत्येक श्रोता को भावाक्रान्त कर देता है। रचनाकार की व्यक्ति चेतना को भी लोंगिनुस ने महत्व प्रदान किया है। इसलिए उन्होंने कहा- 'उदात्त महान् आत्मा की प्रतिध्वनि है।' (Sublimity is the ecco of the great soul)

प्र. उदात्त के नैसर्गिक तत्व क्या-क्या है?

उ. किसी भी कृति में औदात्य का संचार करनेवाले नैसर्गिक तत्व है- उदात्त विचार एवं प्रेरणा प्रसूत उद्‌गाम आवेग। इन दोनों को लोंगिनुस ने मन की ऊर्जा कहा है। क्योंकि इसका सीधा संबन्ध कलाकार की आत्मा और उसके व्यक्तित्व से है। वे सभी प्रकार के आवेगों को उदात्त के पोषक नहीं मानते हैं। दया, शोक और भय उनके अनुसार उदात्त के पोषक नहीं होते। ये इसका विरोधी तत्व हैं। क्योंकि ये चेतना का संकोच कर देता है। अतः मन की ऊर्जा के बाधक हैं।

प्र. लोंगिनुस के मत में उदात्त सृजन में सहायक अलंकार क्या-क्या है? संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उ. लोंगिनुस के अनुसार कविकर्म अनेक बातों का समन्वय है। आत्मा की गरिमा के समान ही अलंकार योजना में निपुणता पाने केलिए कला के साथ समन्वय अनिवार्य है। अलंकारों का प्रयोग सहज रूप से होना चाहिए। पाठक को इसका पता भी न चलेगा कि अलंकार प्रयुक्त हो रहे हैं। उदात्त सृजन में सहायक अलंकारों के रूप में वे विस्तारण (संबोधन), प्रश्नालंकार, विपर्यय, व्यतिक्रम, पुनरावृत्ति, छिन्नवाक्य, प्रत्यक्षीकरण, संचयन, रूप-परिवर्तन, पर्यायोक्ति आदि को मानते हैं। विस्तारण में वक्ता अपनी युक्तियों को विस्तार से प्रस्तुत कर उदात्त पोषण में सहायक होता है। प्रश्नालंकार में वक्ता स्वयं ही प्रश्न कर उसका उत्तर देता है। विपर्यय और व्यतिक्रम में शब्दों और विचारों के क्रम में परिवर्तन अथवा उलट-फेर की जाती है। शब्दों और वाक्यों की पुनः आवृत्ति पुनरावृत्ति में की जाती है तो छिन्नवाक्य में क्रोधवश के अंतर्गत किसी भी वाक्य की कडी को बार-बार दुहराया जाता है। प्रत्यक्षीकरण में साक्षात् वर्णन द्वारा समस्त विषयवस्तु जीवित सी प्रतीत होने लगती है। पर्यायोक्ति में घुमा-फिराकर बात कही जाती है। इस प्रकार प्रसंगानुकूल, प्रच्छन्न और सहज रूप से अलंकारों का प्रयोग लोंगिनुस ने किया है।

प्र. उदात्त के विरोधी तत्व क्या-क्या है?

उ. उदात्त विरोधी तत्वों में वाग्स्फीत या वागाडंबर (Bombast), शब्दाडंबर अथवा भावहीन एवं क्षुद्रवाग्विलास (Frigidity), बालेयता (Puerility) और भावाडंबर (False sentiment) आदि का उल्लेख्र किया है।

- वागाडम्बरः- अर्थात् भाव की गरिमा के अभाव में भी अलंकृत और भारी शब्दों का प्रयोग। वागाडम्बर उदात्त अतिक्रमण के प्रयास से उत्पन्न होता है।
- शब्दाडम्बरः- लोगों को प्रभावित करने के मोह में अतिशयोक्तिपूर्ण कथन ही शब्दाडंबर है। अन्युक्तिपूर्ण शब्दावली शब्दाडंबर को जन्म देती है।
- बालेयताः- अप्रौढ़ रचना में दिखाई पडता है। इसमें गरिमा का अभाव होता है। कृत्रिमता और चमत्कार को प्रस्तुत करने के परिणामस्वरूप बालेयता जन्म लेती है।
- भावाडम्बरः- यह आवेग विषयक दोष है। अवसर केलिए अनुपयुक्त आवेग का प्रदर्शन इसका परिणाम है। शैलीगत इन प्रमुख्र दोषों के अतिरिक्त अन्य दोषों का उल्लेख्र भ लोंगिनुस ने किया है। भाषा का अस्तव्यस्त प्रवाह लयपूर्ण रचनाओं में पाया जाता है। अभिव्यक्ति की संक्षिप्तता और अभिव्यक्ति की क्षुद्रता को वे उदात्त का विरोधी तत्व मानते हैं।

प्र. स्वच्छन्दतावाद पर टिप्पणी लिखिए।

उ. स्वच्छन्दतावाद आत्मपरकता तथा रचनाकार की स्वतंत्रता के अधिकार का दावा करता है। इसमें नव्य शास्त्रवाद के सिद्धांतों तथा स्थापनाओं का विरोध हुआ। स्वच्छन्दतावादी युग के आलोचक व्यक्तिवादी थे। इसमें व्यक्ति और रचना दोनों के ही स्वातंत्रय की आवाज़ बुलन्द की गई। 'रोमांटिक' शब्द को एक काव्य प्रवृत्ति अथवा वाद के रूप में सर्वप्रथम प्रयुक्त करनेवाले जर्मन आलोचक फ्रेड्रिक स्लेगल थे जिन्होंने इस शब्द का प्रयोग क्लासिस्ज़िम के विरोधी अर्थों में उनकी रचना 'एथेन्ड्म्' में किया। फ्रांस की राज्यक्रांति और उस राज्यक्रान्ति को सम्बल देनेवाले रूसो ने स्वच्छन्दतावाद के विकास को पर्याप्त प्रभावित किया है। स्वच्छन्दतावादी काव्य-लहर सर्वप्रथम इंग्लैण्ड एवं जर्मनी में आई। इंग्लैण्ड में वर्डसवर्थ ने अपने ग्रंथ 'लिरिकल बलैड्स' की भूमिका में काव्य मुक्ति की घोषणा कर दी। बाद में कॉलरिज, कीट्स, शेली, बायरन आदि अनेक साहित्यकारों के द्वारा इस काव्य आन्दोलन का पर्याप्त पल्लवन एवं विकास हुआ है। विक्टर ह्यूगो ने स्वच्छन्दतावाद को 'साहित्यिक उदारवादिता' कहा है। वस्तुतः स्वच्छन्दतावादी आन्दोलन के आविर्भाव में राजनीतिक, सामाजिक और साहित्यिक सभी परिवर्तनों का प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष हाथ रहा है।

प्र. वड्सवर्थ की राय में कवि कौन होता है?

उ. वड्सवर्थ के अनुसार कवि की संवेदनशक्ति अधिक जीवंत होती है। उसमें अधिक उत्साह, अधिक सौकुमार्य होता है। मानव स्वभाव का उसे गंभीरता से ज्ञान होता है। उनकी आत्मा अधिक विशाल होती है। कवि सामान्य व्यक्ति की अपेक्षा अधिक संवेदनशील होता है। उनके अनुसार कवि जो कुछ सोचता है, अनुभव करता है उसे अभिव्यक्त करने की क्षमता किसी बाह्य उत्तेजना से नहीं बल्कि अभ्यासवश अर्जित कर लेता है। इसलिए वर्ड्सवर्थ ने कवि को दैवी आवेश से प्रभावित व्यक्ति न मानकर उसे अभिव्यक्ति की अर्जित शक्ति से संपन्न संवेदनशील व्यक्ति माना है। सामान्य व्यक्ति से कवि का संबन्ध जोडते हुए उन्होंने कहा है कि कवि कवियों केलिए लिखते नहीं, जनसाधारण केलिए लिखते हैं।

प्र. वड्सवर्थ ने कविता में गीतों को क्यों महत्व दिया है?

उ. रूमानी साहित्य में नाटकों का महत्व हटने लगता है और नाटक के स्थान पर गीतों की प्रतिष्ठा होती है। गीतों की लयबद्धता और संक्षिप्तता ने आलोचकों को भी इस ओर आकर्षित किया है। अनुभूति की तीव्रता को, वैयक्तिक दृष्टिकोण को समझने और संप्रेषित करने में गीतों की भूमिका अन्य साहित्यिक रूपों की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण होती है। नाटक का प्रदर्शन और प्रेषण दोनों ही श्रमसाध्य और धनसाध्य है। आज भी थिएटर का संबन्ध प्रायः अभिजात वर्ग के साथ ही जुडा हुआ है। इसके विपरीत गीत जनता केलिए अधिक सुलभ विधा है। इसलिए वड्सवर्थ ने भी गीतों को अधिक महत्व प्रदान किया है।

प्र. वर्डसवर्थ और कॉलरिज में मतभेद क्या है?

उ. कॉलरिज ने वर्डसवर्थ के विचारों पर बडा आक्षेप प्रकट किया है। कविता की भाषा को लेकर तीन प्रमुख मुद्दों पर इन लोगों ने विचार प्रकट किए हैं। कॉलरिज के अनुसार वर्डसवर्थ केलिए जन साधारण की भाषा मूढ़ जनता की भाषा नहीं है। उनके प्रदेश के निवासी धर्म तथा बाइबिल का विशेष ज्ञान रखनेवाले हैं। धार्मिक आस्था और प्रार्थना गीतों के प्रभाव से वहाँ की बोलचाल की भाषा में परिष्कार आ गया है। लेकिन अन्य प्रदेशों की भाषा इतनी सक्षम नहीं है। गीतों में बोलचाल की भाषा का प्रयोग करने से नीरसता का विधान होता है। इसलिए गीतों की भाषा को परिष्कृत और परिमार्जित करने का सुझाव कॉलरिज ने किया था। कविता में पुराने प्रतीकों और बिंबों के प्रयोग का विरोध किया है। उनकी दृष्टि में बुराई उन प्रतीकों या बिंबों में नहीं, बल्कि उनके प्रयोग और व्यवहार में है, क्योंकि प्रतीक और बिंब अपने आपमें अच्छे या बुरे नहीं होते। वर्डसवर्थ ने कविता की भाषा और गद्य की भाषा में कोई अंतर नहीं माना था। इसका भी कॉलरिज ने विरोध किया। छंद के आधार पर कॉलरिज ने गद्य और कविता की भाषा को मूलतः भिन्न माना। उनके अनुसार छंद कविता का अंतरंग तत्व है जो कवि की आत्मा से जन्म लेता है। वस्तुतः वर्डसवर्थ और कॉलरिज समकालीन कवि और आलोचक है। उनकी दृष्टियों में बहुत सारी भिन्नता होते हुए भी रूमानी काव्यधारा में इनकी भूमिका महत्वपूर्ण है।

प्र. उत्कृष्ट काव्य के गुण के बारे में कॉलरिज का मत क्या है?

उ. कॉलरिज ने उत्कृष्ट काव्य के मुख्यतया, चार गुणों का उल्लेख किया है। वे हैं छन्द, कथ्य से तटस्थता, प्रधान भाव और कविता और दर्शन।

- छन्दः- कॉलरिज के अनुसार बिना छंद के महान रचना असंभव है। छन्द कॉलरिज के अनुसार काव्य के अंतरंग गुण है जो काव्य के सभी तत्वों को संयोजित करता हुआ अन्विति की प्रतिष्ठा करता है। उनकी दृष्टि में छंद आदर्श लयात्मकता का ही नाम है। यह गुण जन्मजात होता है। अभ्यास से उस गुण का विकास कर सकते हैं। मात्र अभ्यास से उसे आर्जित नहीं किया जा सकता।
- कथ्य़ से तटस्थताः- श्रेष्ठ काव्य का दूसरा गुण तटस्थता से जुडना है। काव्य विषय कवि के निजी जीवन से दुर का होना चाहिए। उनकी दृष्टि में कवि की वैयक्तिक अनुभूतियों को काव्य में हूबहू प्रस्तुत करना उचित नहीं है।
- प्रधान भावः- प्रधान भाव सभी बिंबों को, सभी घटनाओं को और उनकी विविधता को एक सूत्र में बाँधकर रखता है। रचना में अन्विति (Unity) की सृष्टि केलिए यह अत्यंत आवश्यक है।
- कविता और दर्शनः- कॉलरिज के अनुसार महान् कवि एक गंभीर दार्शनिक भी होता है। 'कविता' संपूर्ण मानव ज्ञान, मानवीय विचारों, मानवीय आवेगों, भावों एवं भाषा की चरम परिणति है। वस्तुतः रूमानी आलोचना में कविता और ज्ञान की घनिष्ठता का प्रतिपादन अवश्य हुआ है।

प्र. कल्पना और ललित कल्पना में क्या अंतर है?

उ. कॉलरिज के अनुसार मन के व्यापार की दो अनिवार्य क्रियाएँ हैं- विश्लेषण और संश्लेषण। विश्लेषण द्वारा हम ऐन्द्रिय ज्ञान को उसके घटक तत्व गुण आदि में विभाजित करते हैं तथा संश्लेषण द्वारा उन विश्लेषित गुणों या तत्वों का संयोग करके नए बिंबों का निर्माण करना मानसिक व्यापार है। इस प्रकार संश्लेषित किए जानेवाले बिंब कभी सार्थक, क्रमबद्ध और सरस होते हैं। कॉलरिज ने इस प्रक्रिया को कल्पना कहा। कभी-कभी संश्लेषण द्वारा प्राप्त होनेवाले बिंब उच्छृंखल और हास्यास्पद होते हैं। दिवास्वप्न को जन्म देनेवाली प्रक्रिया को कॉलरिज ने ललित कल्पना का नाम दिया है। ललित कल्पना निम्न प्रकार की शक्ति है जिसका प्रयोग व्यक्तिगत जीवन में होता है। किसी सार्थक आस्वाद बिंब का निर्माण वह नहीं कर सकती। कल्पना द्वारा निर्मित बिंबों में संबद्धता होती है। इस प्रकार उन्होंने कल्पना को ललित कल्पना से उच्चतर धरातल पर प्रतिष्ठित किया।

प्र. मुख्य कल्पना (Primary imagination) और गौण कल्पना (Secondary imagination) में भिन्नता क्या है?

उ. मानवमात्र में पायी जानेवाली कल्पना को कॉलरिज ने मुख्य कल्पना कहा है और कवि की कल्पना सर्जनात्मक है। कॉलरिज के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में कविता लिखने की शक्ति होती है। किसी में अधिक और कसी में कम। जैसे सुनार सोने को गलाकर उसे विविध आभूषणों में रूपान्तरित करता है, उसी प्रकार प्राथमिक कल्पना द्वारा प्रस्तुत उपादानों को कलाविधायिनी कल्पना नूतन रूप में बदलकर कलाकृति की सृष्टि करती है। कल्पना शक्ति को दार्शनिक स्तर पर प्रस्तुत करते हुए कॉलरिज ने कहा है कि ईश्वरीय कल्पना अनंत और विराट होती है और मानव की कल्पना सीमित होती है।

प्र. क्रोचे का दार्शनिक दृष्टिकोण व्यक्त कीजिए।

उ. क्रोचे आत्मवादी विचारक थे। क्रोचे ने आत्मा की मूलतः दो प्रवृत्तियाँ- ज्ञानात्मक एवं व्यावहारिक स्वीकार की। ज्ञानात्मक प्रवृत्ति के दो भेद है- सहजानुभूति और विचारात्मक क्रिया। व्यावहारिक प्रवृत्ति के दो भेद है- आर्थिक अथवा निजी योगक्षेम से संबद्ध और नैतिक। कला और साहित्य का संबन्ध वे सहजानुभूति से जोडते हैं। सहजानुभूति ही उनका स्वयंप्रकाश ज्ञान अथवा अभिव्यंजना है। यह पूर्णतः निरपेक्ष एवं विलक्षण आत्मिक क्रिया है। बौद्धिक क्रिया से इसका कोई संबन्ध नहीं है। क्रोचे की दृष्टि में सहजानुभूति अथवा कलात्मक अनुभूति का सामान्य अनुभूति से गहरा अंतर है। अर्थात् कलात्मक अनुभूति अथवा सहजानुभूति एक अद्‌भुत आत्मिक क्रिया है, जिसका अन्य किसी क्रिया अथवा प्रवृत्ति से कोई संबन्ध नहीं होता।

प्र. क्रोचे वस्तु को बर्हिगत मानते हैं और रूप को आत्मा की क्रिया। क्यों?

उ. अभिव्यंजना के दो पक्ष लक्षित होते हैं- वस्तु और रूप। रूप स्थिर होता है और सामग्री बदलती रहती है। इस कारण अभिव्यंजना में परस्पर अंतर होता है। बाह्य जगत् की वस्तु पहले कलाकार के अर्न्तमानस में आती है फिर उसकी अभिव्यंजना होती है। अभिव्यंजना

की व्याख्या बिंब की व्याख्या के निकट पडता है। बिबं में वस्तु या सामग्री है जो बर्हिजगत् से आती है तथा कवि कल्पना उस सामग्री को एक ख़ास रूप से संयोजित करती है। उदाहरण केलिए उषा, संध्या, वर्षा आदि प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन अनेक बिंबों के रूप में काव्य में मिलता है। इस प्रकार काव्य बिंब के विवेचन में बर्हिजगत् से प्राप्त वस्तु तथा कल्पना से प्राप्त वस्तु तथा कल्पना से प्राप्त संयोजन या रूप की मान्यता को स्वीकार करने में कोई बाधा नहीं होती।

प्र. रिचर्ड्स के मूल्य सिद्धांत क्या है?

उ. रिचर्ड्स का स्पष्ट मता है कि कविता का मूल्य उसकी पाठक या श्रोता के मन को प्रभावित करनेवाली क्षमता से आँका जाता है। जो कविता या कलाकृति स्नायु मंडल में व्यवस्था उत्पन्न करती है वही प्रेरणा या आनंद प्रदान करती है। उनके अनुसार मन के भीतर आवेगों या वृत्तियों में उतार-चढ़ाव जीवन के परिस्थितियों या संघर्षों के कारण होता रहता है। इससे मन में तनाव या विषमता उत्पन्न होती रहती है। काव्य और कलायें इन आवेगों में संतुलन स्थापित करके सुख पहुँचाती है। सौंदर्य इसलिए मूल्यवान् है। आवेगों की दो स्थितियाँ है- काम्य (आसक्तिमूलक) और अकाम्य आवेग (विरक्तिमूलक)। इन दोनों में से काम्य आवेग स्थिरता, संतुलन और व्यवस्था स्थापित करता है। बहुत अधिक सीमा तक कविता और कला विशिष्ट सीमित अनुभवों के पूर्ण एवं व्यवस्थित विकास में योगदान देती है। वे हमारी अनुभूतियों और संवेदनाओं को व्यापक बनाती है। इस प्रकार मानव-मानव के बीच संवेदनात्मक एकता स्थापित करती है। रिचर्ड्स के अनुसार इस संतुलन या समन्वय ही मूल्य है। इस संतुलन के सिद्धांत को रिचर्ड्स ने सिनेस्थीसिस कहा है। इस मूल्य सिद्धांत को सिनेस्थीसिस या सामंजस्य या संतुलन का सिद्धांत कह सकते हैं।

प्र. संप्रेषण सिद्धांत संबन्धी रिचड्स की मान्यतायें?

उ. संप्रेषण रिचर्ड्स के आलोचना सिद्धांत का दूसरा स्तंभ है। संप्रेषण शक्ति के कारण मानव समाज का सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और तकनीकी विकास हुआ है। संप्रेषण क्रिया का सर्वाधिक उपयोग कला कर्म में होता है। वास्तव में कलायें संप्रेषण क्रियाओं के उत्कृष्ट चरम रूप है। कलाकार जिस तन्मयता से अपनी रचना करता है, उसकी संप्रेषणीयता उतनी है प्रभावकारी होती है। प्रायः कलाकार की संप्रेषण क्षमता उसके कलाकृति के प्रति संतोष और उसके ठीक होने की भावना पर निर्भर करती है। कवि की संप्रेषणीलता वही है जबकि पाठक में भी कवि की संवेदना जग जाए। रिचर्ड्स का विचार है कि संप्रेषण तब होता है जब एक मस्तिष्क अपने पर्यावरण में इस प्रकार क्रियाशील होता है कि दूसरा मस्तिष्क उससे प्रभावित हो। दूसरे मन में जो अनुभूतियाँ जागृत हों वे पहले मन की अनुभूतियों के समान हों और आंशिक रूप से पहले के द्वारा प्रेरित हों। संप्रेषण एक जटिल प्रक्रिया है। रिचर्ड्स के अनुसार कलाकार का अनुभव नव्य होने के कारण संप्रेषणीलता समाज केलिए मूल्यवान् है। कलाकार की भी कसौटी यही है कि वह अपना अनुभव या उसका कोई अंश दूसरों तक भली-भाँति पहुँचा सके जिसका रचना में ज़्यादा प्रबल और प्रभावशाली संप्रेषणीलता होती है, वह उतना ही बडा कवि या कलाकार होता है।

प्र. काव्य भाषा संबन्धी रिचर्ड्स का विचार?

उ. काव्य भाषा में रिचर्ड्स ने चार तत्वों को प्रमुख माना है। वस्तुबोध, मनोवेग, ध्वनि और अभिप्राय।

- वस्तुबोध (Sense):- यह वह पक्ष है जिसमें भाषा सामान्य अर्थ का ज्ञान कराती है। क्योंकि काव्य के अध्ययन का पहला चरण तथ्य या अर्थ के ज्ञान का है।
- मनोवेग (Feelings):- यह वस्तु के साथ लेखक का रागबोध व्यक्त करता है। काव्यगत तथ्य का अर्थ मात्र तथ्य नहीं होता उसमें मात्र अर्थ का बोध नहीं होता। वरन् उस काव्य रूप के प्रति कवि की कोई मनोभावना होती है जो कविता की भाषा में व्यक्त होती है।
- ध्वनि (Tone) :- भाषा के माध्यम से कव सहृदय के साथ अपने आपको प्रतिबद्ध करता है।
- अभिप्राय :- लेखक का अभिप्राय ही उसके अनुभव आदि की समग्रता को विशिष्ट बनाता है। वह भी भाषा में मूर्तिमान होता है। श्रेष्ठ काव्य की रचना में इन चारों गुणों की योजना सहज भाव से रहती है।

प्र. कवि की कल्पना शक्ति संबन्धी रिचर्ड्स का विचार व्यक्त कीजिए।

उ. रिचर्ड्स के अनुसार काव्य रचना में कवि की कल्पना शक्ति सहायक होती है। उनके अनुसार कल्पना शक्ति के 6 गुण हैं।

- 1) कविता सहृदय में मनोवेगों को जगाती है, उनकी संयोजना और व्यवस्था करती है। साथ ही सामंजस्य की स्थापना करती है। कविता में चाक्षुक्ष बिंबों का निर्माण कल्पना द्वारा होता है।
- 2) कवि स्वानुभूति के साथ लोकानुभूति का भी चित्रण करने के कारण कल्पना का उपयोग होता है। कल्पना के सहारे कवि अन्य व्यक्ति के परिवेश के परिस्थितियों का चित्रण तन्मयता से कर पाता है।
- 3) भाषा का अलंकरण कल्पना का तीसरा कार्य है। जनभाषा का प्रयोग, विशिष्ट शब्दों का चयन, छंद एवं लय की उद्भावना, अलंकारों का प्रयोग आदि इसमें शामिल होते हैं। यह कार्य कल्पना द्वारा संपन्न होता है।
- 4) कृति के अर्थ व्यय विविध तत्व तथा विचार, दृश्य, घटना, भाव आदि और भाषा के विविध तत्व जैसे शब्द, प्रतीक, नाद, लय आदि की समन्विति कल्पना द्वारा होती है।
- 5) कल्पना का उपयोग केवल काव्य के क्षेत्र तक ही सीमित नहीं है, ज्ञान के अन्य क्षेत्रों में भी जैसे विज्ञान तथा दर्शनशास्त्र आदि में भी कल्पना का प्रयोग अनिवार्य रूप से किया जाता है। यहाँ कल्पना का कार्य विविध तथ्यों एवं व्यापारों के बीच संबन्धों का उद्घाटन करे।
- 6) कल्पना का अंतिम कार्य वह है जो शब्द और अर्थ, विचार और भाव में समन्वय स्थापित करते हुए उनके विरोधों को दूर करें। कल्पना संबन्धी रिचर्ड्स का विचार यही है।

प्र. परंपरा के संबन्ध में इलियट की अवधारणा क्या है?

उ. परंपरा के संबन्ध में इलियट कहते हैं कि कभी-कभी परंपरा का प्रयोग भ्रामक अर्थ में होता है। परंपरा का अर्थ यह नहीं है कि पूर्ववर्ती नियमों और प्रवृत्तियों का अन्धानुकरण किया

जाए। परंपरा वास्तव में ऐतिहासिक चेतना या इतिहासबोध है। इलियट के मतानुसार साहित्य एक अविच्छिन्न एवं अखंड धारा है। अतीत और वर्तमान उसके दो छोर है, जो एक दूसरे को प्रभावित करते रहते हैं। अतः परंपरा का एक स्वरूप अतीत में प्रवाहित होता है और दूसरा वर्तमान संदर्भों और परिवेशों में अनुस्यूत रहता है। कवि की चेतना में जब समाज, जाति और देश की अखंड भावना का एक सतत विकासशील सत्य प्रकाशित हो जाता है, तब अतीत और वर्तमान का केवल सामंजस्य ही स्थापित नहीं होता वरन् वर्तमान के संदर्भ में अतीत के मूल्यांकन के नए सूत्र भी प्राप्त होता है।

प्र. इलियट ने महान् काव्य की रचना में ज्ञान की परिपक्वता केलिए किन किन बातों को अवश्यक माना है?

उ. → मस्तिष्क की प्रौढ़ता

→ शील की प्रौढ़ता

→ भाषा शैली की प्रौढ़ता।

मस्तिष्क की प्रौढ़ता केलिए ऐतिहासिक ज्ञान और ऐतिहासिक चेतना या इतिहासबोध आवश्यक है। जिसका तात्पर्य यह है कि कवि को अपने देश और जाति के इतिहास के साथ-साथ अन्य सभ्य जातियों के इतिहास का ज्ञान भी होना चाहिए। शील की प्रौढ़ता का तात्पर्य है कवि के सामने आदर्श, उदात्त और उच्च चरित्रों के गुणों का स्वरूप स्पष्ट हो। इसके आधार पर ही कवि, आदर्श चरित्रों का निर्माण कर सकता है। साथ ही भाषा शैली की प्रौढ़ता केलिए यह आवश्यक है कि पूर्ववर्ती महान कवियों की रचनाओं की भाषा का भली-भाँति अध्ययन किया जाय। उपर्युक्त तीनों गुणों केलिए परंपरा का ज्ञान आवश्यक है। इस प्रकार इलियट के विचार से परंपरा का काव्य रचना में महत्वपूर्ण स्थान है।

प्र. इतिहासबोध संबन्धी इलियट का विचार व्यक्त कीजिए।

उ. इतिहासबोध से उनका तात्पर्य अतीत को वर्तमान में देखने से हैं। वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में अतीत का इतिहासबोध काव्य में नयी दृष्टि भरता है। वास्तव में परंपरा के आलोक में इतिहासकार को यह जानकारी मिल जाती है कि उसे क्या करना है तथा उसकी कृति का मूल्य क्या है। परंपरा का ज्ञान इसलिए आवश्यक है कि उससे हम यह जान लेते हैं कि उसका कौन सा अंश ग्रह्य है तथा कौन सा त्याज्य। परंपरा के किस अंश के प्रति विद्रोह करना चाहिए यह विवेक भी परंपरा के ज्ञान के बिना नहीं हो सकता। इस प्रकार अतीत को वर्तमान में देखने का या इतिहासबोध संबन्धी इलियट का सिद्धांत एक मौलिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

प्र. इलियट परंपरा को संस्कृति के रूप में स्वीकार करते है? क्यों?

उ. यह परंपरा किसी विशिष्ट जाति एवं समाज की सांस्कृतिक विरासत है। संस्कृति समाज के जीवन का एक विशिष्ट रूप या ढंग है जो पूरे समाज के विचारों और रीति-रिवाज़ों को स्पष्ट करती है। वह अनेक रूपों में होती हुई भी समग्रता में एक है। इसी के परिज्ञान से काव्य के अंतर्गत कवि विभिन्नताओं का समाहार कर अनेकता में एकता की स्थापना करता है। इससे

कलाकार और कवि एक समान लक्ष्य और इतिहासबोध के सूत्र में बन्द जाते हैं। उनकी मान्यता है कि समस्त साहित्य अखंड है। उसमें परंपरा की अबाध और अखंड अभिव्यक्ति होती रहती है। श्रेष्ठ काव्य की रचना केलिए यह आवश्यक है कि कवि को समाज और देश की अखंड चेतना या परंपरा का ज्ञान हो। इसके बिना आभिजात्य या उत्कृष्ट काव्य की सर्जना नहीं हो सकती। इलियट के विचार से परंपरा या इतिहासबोध कवि की वैयक्तिक अनुभूतियों की अपेक्षा अधिक मुल्यवान है। अतः कवि इस मूल्यांकन केलिए जब वैयक्तिक अनुभूतियों का समर्पण करता है तभी उसका काव्य उत्कृष्ट हो सकता है।

प्र. शास्त्रवाद अथवा आभिजात्यवाद (Classicism) पर टिप्पणी लिखिए।

उ. शास्त्रवाद से तात्पर्य शास्त्रीय पद्धति के अनुसरण से है जो क्लासिसिज़्म की एक मूख्य प्रवृत्ति थी। आभिजात्यवाद मूलतः 'क्लास' या वर्ग विभाजन के इतिहास से संबद्ध शब्द है। प्राचीन रोम में पाठक वर्ग की सामाजिक बौद्धिक स्थिति को देखते हुए दो प्रकार के साहित्य की रचना हो रही थी। दूसरी राती में लातिन के लेखक ओलस जेलियस (Aulus Gellius) ने अपनी पुस्तक 'नौकटिस एटिस' में दो प्रकार के लेखकों का उल्लेख किया है। वे हैं स्क्रिपटर क्लासीकस और स्क्रिपटर प्रोलेतेरिउस। रोमीय साहित्य के पतन के बाद आनेवाले साहित्यकारों ने अपने पूर्ववर्ती साहित्यकारों के कृतित्व को ही अभिजातवद की गरिमा से मंडित किया है। इस युग के साहित्यकारों ने प्राचीन साहित्यकारों के वैभवपूर्ण उदात्त साहित्य दृष्टि पथ में रखकर कुछ मान्यताएँ स्थापित कीः-

- वर्तमानकाल से पूर्ववर्ती साहित्यकार अथवा साहित्य उत्थान के चरम शिखर को स्पर्श कर चुके हैं।
- अतः वर्तमान साहित्यकार का साहित्यिक दायित्व है कि उन्हीं पूर्ववर्ती साहित्यकारों का अनुसरण करे।
- इस साहित्यिक अनुकरण में उन प्राचीन कृतियों के नियमों तथा शिल्पानुशासन का पूर्णतः पालन किया जाना चाहिए।

इस प्रकार इस युग के रोमन कवि आलोचकों ने प्राचीन साहित्यकारों का ही अनुसरण किया।

प्र. शास्त्रवाद की कथ्यगत और शैलीगत विशेषताएँ?

उ. कथ्यगत

- भव्य विचार एवं लोककल्याण की भावना तथा मानव जीवन की चिरंतन समस्याओं का प्रस्तुतीकरण अभिजातवादी साहित्य का प्रमुख कथ्य होता है।
- कवि के व्यक्तित्व एवं अनुभूति के चित्रण के स्थान पर वस्तुनिष्ठ कथ्य के प्रस्तुतीकरण पर बल दिया जाता है।

शैलीगत

- प्राचीन आचार्यों के अनुससरण से काव्य सिद्धि की प्राप्ति तथा परंपरा का निर्वाह होता है।

- उदात्त भाषा शैली का प्रयोग- भाषा परिष्कृत व्याकरणोचित तथा भव्य होनी चाहिए। शैलीगत परिमार्जन को कथ्य से भी प्राथमिकता मिलनी चाहिए।
- संतुलन की प्रधानता, अर्थात् विष्य तथा रूपगत संतुलन- कथ्य तथा कथनगत किसी प्रकार की भी अराजकता पर नियंत्रण रखकर पूर्ण संतुलन का निर्वाह होना चाहिए।
- भावनाओं की अराजकता को व्यवस्थित करके शैली में कठोर संयम का पालन किया जाना चाहिए आदि।

प्र. नवशास्त्रवाद अथवा छदमशास्त्रवाद की विशेषताएँ लिखिए।
(Neo-classicism or Pseudo-classicism)

उ. नवशास्त्रवाद प्राचीन शास्त्रवादी साहित्यात्मा का मध्ययुगीन यूरोपीय साहित्यकारों द्वारा किया हुआ पुनरनुभव है। अर्थात् प्राचीन साहित्य सिद्धांतों का समुत्थान है। नवशास्त्रवाद में प्रकृति के अनुकरण पर विशेष बल दिया जाता है। सार्वभौम एवं सार्वकालिक एवं आदर्श पात्रों पर बल दिया है। नवशास्त्रवादी आलोचकों ने ऐसे नायकों के चयन पर ज़ोर दिया, जो शक्ति और गुणों में महान हों। अतिमानवीय पात्रों अथवा तत्वों के बहिष्कार भी किया। काव्य प्रयोजन के नैतिक उपदेश के पक्षपाती है नवशास्त्रवादी। रचना विधान संबन्धी नियमों का निर्वाह साहित्यकार केलिए वे अनिवार्य मानते हैं। उन्हें रचना के बाह्य आकार ही महत्वपूर्ण है। अपनी रचना-विधान संबन्धी अवधारणा में वे कहीं-कहीं शास्त्रवादियों से भी अधिक नियमबद्ध कृत्रिमता को समेटे हुए हैं। नव्य शास्त्रवादी की दृष्टि मूलतः स्वस्थ तथा समाजोन्मुखी होती है और सिद्धांत के स्तर पर इनकी इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि रचना में भाव तथा बुद्धि का समन्वय होना चाहिए। नव्य-आभिजात्यवादी विचारधारा में कला तथा साहित्य में संतुलन, संयम, अनुशासन, व्यवस्था तथा तर्कसंगति के मूल्यों पर बल दिया जाता रहा है। नव्य शास्त्रवाद में सिद्धांत निरूपण केलिए तर्क, विवेक तथा युगानुकूलता को अधिक महत्व दिया जाने लगा है।

प्र. साहित्य संबन्धी मार्क्सवादी विचार व्यक्त कीजिए।

उ. मार्क्सवादी साहित्य दृष्टि लोककल्याणकारी दृष्टि है। वही साहित्य मान्य है, जो जनकल्याण को आदर्श मानकर चलते हैं, जो शोषण एवं विषमता से मुक्त वर्गहीन समाज के निर्माण में प्रेरणा दे। इस प्रकार साहित्य का प्रधान लक्ष्य है उपदेश देना, शिक्षा देना। मार्क्सवादी दृष्टि अभिव्यंजना के स्तर पर लोककल्याण के प्रयोजन के रूप में स्वीकार करती है। वह कलाकार को मार्क्सवादी सिद्धांत एवं सामाजिक दायित्व के आधार पर रचना करने की प्रेरणा देती है। भाषा एवं शिल्प के स्तर पर सरलता के मूल्य को स्वीकारती है और रचना का मूल्यांकन सामाजिक प्रकृति के संदर्भ में करती है। उनके अनुसार साहित्य की उपयोगिता साहित्यिक गुणों के आधार पर नहीं है, उसकी चेतना के आधार पर है, इसमें साहित्यिक गुणों की अस्वीकृति नहीं है, मगर वे गुण साहित्य के उद्देश्य द्वारा निर्धारित होते हैं और जनकल्याण के उद्देश्य की तुलना में साहित्यिक गुण गौण है।

प्र. मार्क्सवादी विचारधारा में कलाकार का क्या स्थान है?

उ. मार्क्सवादी साहित्य दृष्टि में कलाकार की स्वतंत्रता का सवाल महत्वपूर्ण है। मार्क्सवाद के अनुसार व्यक्ति स्वातंत्रय का सिद्धांत असंगत एवं भ्रांतिपूर्ण है। व्यक्ति कभी भी स्वतंत्र नहीं होता। उसकी इच्छा स्वाधीन नहीं होती। व्यक्ति परिस्थितियों का दास होता है। जैसी सामाजिक स्थिति होती है, वैसी ही व्यक्ति की दशा होती है। वस्तुतः व्यक्ति का निर्माण समाज के द्वारा ही होता है। व्यक्तित्व समाज की कृति है और इस व्यक्तित्व की कृति है साहित्य। इस प्रकार साहित्य कृति की कृति है। साहित्य में सामाजिकता अनिवार्य रूप से आती है तथा साहित्य के मूल्यांकन की दृष्टि अनिवार्यतः जनवादी दृष्टि ही होनी चाहिए।

प्र. मार्क्सवाद की विशेषताएँ।

उ. → मार्क्सवाद अर्थव्यवस्था को सर्वाधिक महत्व देता है।
→ मानव समाज के विकास की अंतिम व्यवस्था वर्गहीन व समतावादी समाज है।
→ मार्क्सवाद जीवन के प्रत्येक पहलू से संबंधित है, केवल अर्थनीति से नहीं।
→ साहित्य और जीवन परस्पर अविभिन्न है।
→ मनुष्य के सारे कर्तव्यों की प्रेरणा उत्पादन है।
→ मार्क्सवाद में 'कला-कला केलिए' का कोई स्थान नहीं है।
→ मार्क्सवादी साहित्य सामाजिक उद्देश्य युक्त यथार्थवादी होता है।
→ मार्क्सवाद में लोकमंगल और मानवतावाद का पक्ष लिया जाता है।
→ व्यक्तिवादी दृष्टिकोण के बजाय समाजवादी दृष्टिकोण महत्वपूर्ण होता है।
→ मार्क्सवादी साहित्य में विषय को बहुत महत्व देते हैं।

प्र. मार्क्सवाद को द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद कहा जाता है, क्यों?

उ. मार्क्सवाद भौतिकवाद का विशिष्ट रूप है, जो यह मानकर चलता है कि सृष्टि का मूल सत्य है पदार्थ। पदार्थ से ही चेतना का उदय हुआ और चेतन जीवन का विकास पदार्थ की संगठनात्मक एवं रचनात्मक प्रक्रियाओं द्वारा निर्धारित होता है। मार्क्सवाद को द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद या वैज्ञानिक भौतिकवाद भी कहा जाता है। द्वन्द्वात्मकता का तात्पर्य है संघर्ष और गतिशीलता। संघर्ष मार्क्सवाद का बुनियादी तत्व है। मार्क्सवाद यह मानकर चलता है कि इतिहास का विकास सहज और शांत भाव से नहीं होता। उसका आधार संघर्ष है। इस संघर्ष की भौतिक या वैज्ञानिक व्याख्या की जा सकती है। द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद मार्क्सवाद का दार्शनिक दृष्टिकोण है। मार्क्स ने सन् 1844 और 1848 के बीच लिखे गये ग्रन्थों में सर्वप्रथम द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद संबन्धी अपने विचार फायर बाख से प्रभावित होकर प्रकट किये। मार्क्स ने हीगेल से द्वन्द्ववाद और फायरबाख (जर्मन दार्शनिक) से भौतिकवाद लेकर अपने सिद्धांत का शिलान्यास किया। मार्क्स के मतानुसार यह सिद्धांत संसार की सभी समस्याओं का यथार्थ हल ढूँढ सकता है। द्वन्द्ववाद से भूत, वर्तमान और भविष्यकालीन सामाजिक परिवर्तनों की दशा का ज्ञान हो सकता है।

प्र. ऐतिहासिक भौतिकवाद से क्या तात्पर्य है?

उ. मार्क्स ने द्वन्द्ववादी पद्धति को इतिहास पर आरोपित करते हुए मानव इतिहास के विभिन्न परिवर्तनों एवं घटनाओं केलिए भौतिक अथवा आर्थिक कारणों को उत्तरदायी ठहराया है। इस प्रकार उन्होंने इतिहास की भौतिकवादी अथवा आर्थिक व्याख्या की है, यही उनका ऐतिहासिक भौतिकवाद है। इस सिद्धांत के अनुसार समाज की व्यवस्था पूर्णतः समाज की आर्थिक स्थिति द्वारा निर्धारित होती है। अर्थात् उत्पादन का साधन तथा वितरण की व्यवस्था के अनुकूल ही सामाजिक संबन्धों का निर्माण होता है। पूँजी की यह सहज प्रकृति है कि वह अधिक हाथों से कम हाथों में केन्द्रित होती चली जाती है। जिसका परिणाम यह होता है कि समाज दो वर्गों में विभाजित हो जाता है। पूँजीपति वर्ग और पूँजीहीन सर्वहारा वर्ग। पहला वर्ग वह है जो आर्थिक उत्पादन के साधनों का स्वामी है तो दूसरा वर्ग उन साधनों में अपना श्रम लगाता है। यह दो वर्ग सामन्तवादी व्यवस्था में और पूँजीवादी व्यवस्था में भी रहते हैं। वर्गों की यह स्थिति संघर्ष का मूल आधार है। इस प्रकार सामाजिक जीवन में चाहे राजनीतिक व्यवस्था हो, चाहे सामाजिक रीति-रिवाज़, नैतिक आदर्श हो, साहित्यिक मान्यताएँ, धार्मिक विश्वास, चाहे दार्शनिक मूल्य सभी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से आर्थिक स्थिति के द्वारा ही नियंत्रित होते हैं। अर्थात् इतिहास का मार्ग भौतिक अथवा आर्थिक मूल्यों से निर्धारित होता है।

4 Weightage Questions

प्र. प्लेटो के काव्यशास्त्रीय दृष्टिकोण पर प्रकाश डालिए।

उ. पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांतों का प्रथम विश्लेषणात्मक अध्ययन महान दार्शनिक प्लेटो ने प्रस्तुत किया था। जीवन के सभी पक्षों पर विचार करते समय साहित्यिक पक्ष पर भी प्लेटो ने अपना विचार प्रकट किया है। प्लेटो के काव्य संबन्धी विचारों को प्रमुख 3 बातों से जोडकर देखा जा सकता है। ये हैं काव्य की प्रेरणा, काव्य का विषय (वस्तु) और काव्य का प्रभाव।

प्लेटो ने *काव्य की प्रेरणा* के रूप में दो तत्वों का उल्लेख किया है- काव्य देवी के आवेश का और कला का। कला से तात्पर्य काव्यशास्त्र के ज्ञान तथा नियमों के अनुसार रचना करने की क्षमता से है। स्थायी रचना वह है जिसमें काव्यदेवी की प्रेरणा लक्षित होती है। मात्र कला से रचना स्थिर नहीं हो सकती। काव्यदेवी से उत्पन्न आवेश की स्थिति कवि, काव्यपाठी और श्रोता के बीच तादात्म्य की स्थिति की स्थापना करती है। जैसे चुंबक लोहे की टुकडे को आकर्षित करते हैं, और आकर्षित लोहा फिर चुंबक जैसा काम करता है और दूसरे टुकडे को वश में कर लेता है। संप्रेक्षण की बात को प्लेटो ने इस ढंग से अभिव्यक्त की है। काव्यदेवी शब्द का अर्थ किसी दैविक या ईश्वरीय चेतना से नहीं जुडता। इसका अर्थ सामान्य यवन देवी-देवताओं के समान है, जो किसी भी हीनकार्य कर सकते हैं। विक्षुब्धता की स्थिति में होनेवाला काव्य सृजन समाज पर अशुभ प्रभाव डालता है। इसलिए राज्य से निष्कासन केलिए योग्य है।

प्लेटो ने *काव्य की वस्तु* (विषय) पर दार्शनिक दृष्टि से विचार किया है। वस्तु की दृष्टि से वे काव्य को अनुकृति की अनुकृति मानते हैं। इसलिए काव्य को मूल सत्य से दुगुना दूर स्थित मानते हैं। अनुकृति सिद्धांत का सूत्रपात प्लेटो के कला और काव्य संबन्धी विवेचन से हुआ। प्लेटो ने काव्य को कला का ही एक रूप माना है। उनका कहना है कि किसी वस्तु से संबन्धित 3 कलायें होती है- वस्तु का उपयोग करने की कला, उसके आविष्कार या निर्माण करने की कला और उसके अनुकरण की कला। प्लेटो का विचार है कि अनुकरण करनेवाले को न तो वस्तु के उपयोग का ज्ञान होता है और न निर्माण का ही। वह वास्तविक वस्तु प्रदान न करके वस्तु का आभास मात्र देता है।

प्लेटो के अनुसार ईश्वर हर आकृति का निर्माता है। विचार या प्रत्यय रूप में ईश्वर ही हर वस्तु को पैदा करता है। इस प्रकार बढ़ई द्वारा निर्मित मेज़ निर्मित न होकर अनुकृत है। अनुकृति होने के कारण समूची सृष्टि मूल सत्य से दूर है। कलाकार या चित्रकार जब मेज़ की तस्वीर बनाता है तो अनुकृति की अनुकृति करता है। इस प्रकार कला अनुकृति की अनुकृति बनकर मूल सत्य से दुगुनी दूर पर स्थित होती है।

प्रभाव की दृष्टि से काव्य पर विचार करते हुए प्लेटो ने 2 प्रकार की दृष्टि अपनायी-

- ऐसा काव्य जिसके प्रभाव से पाठक या श्रोता के मन में निर्मल भावों का संचार हों तथा जो उसे सन्मार्ग की ओर प्रेरित करे वह निश्चय ही काम्य और मूल्यवान् माना जाएगा।
- जिस काव्य के श्रवण से विवेक कुंठित हो जाए, निम्नवृत्तियों का पोषण हों तथा निम्नकोटि के ऐन्द्रिय आनन्द की उपलब्धि हो, वह निश्चय ही त्याज्य है।

प्लेटो मानते हैं कि काव्य से आनंद की प्राप्ति होती है। समाज को काव्य से जो आनंद प्राप्त होता है, उसकी तीन कोटियाँ मानी जा सकती है- ऐन्द्रिय आनंद, बौद्धिक आनंद और आत्मिक आनंद। उनके अनुसार काव्य ऐन्द्रिय पक्ष को जगाता है और निकृष्ट कोटि के आनंद की ओर व्यक्ति को प्रेरित करता है। इससे व्यक्ति सत्य से दूर होता है। प्लेटो काव्य जगत् और यथार्थ जगात् में भेद नहीं कर पाते हैं। काव्य के पात्र काल्पनिक है, और उनकी श्रद्धा यथार्थ जगत् के व्यक्ति की श्रद्धा से भिन्न है।

वस्तुतः प्लेटो की समीक्षा में काव्य के मूलभूत तत्वों की चर्चा मिलती है, परन्तु पुष्टि का एकाकीपन और विषय का आनुषंगिक विश्लेषण यही निष्कर्ष पर पहुँचने में बाधक बन जाते हैं। फिर भी प्लेटो ने दो मूल भूत तत्वों की अमर प्रतिष्ठा कर गए हैं- काव्य में सत्य का आधार और लोकमंगल की स्थापना। तीसरी उद्भावना यह है कि काव्य का जन्म कवि के मनः विक्षेप से होता है। यह विक्षेप एक प्रकार की दैवी प्रेरणा का परिणाम होता है। साहित्य विषयक उनकी मान्यताएँ इतनी मौलिक तथा गंभीर है कि पाश्चात्य काव्यशास्त्र के इतिहास का आरंभ उन्ही से माना जाता है।

प्र. अनुकरण सिद्धात् (Theory of Mimesis)

उ. ग्रीक शब्द मिमेसिस का अंग्रेज़ी अनुवाद है इमिटेशन (imitation)। हिन्दी में इसका अनुवाद 'अनुकृति' अथवा 'अनुकरण' किया गया है। प्लेटो ने यह शब्द अपने पूर्ववर्ती साहित्यकारों से ग्रहण किया था। अरस्तू ने संभवतः यह शब्द अपने गुरु प्लेटो से ग्रहण कर कला को अनुकरणात्मक माना है। उन्होंने साहित्यकला का मूल्यांकन एक सौंदर्यशास्त्री के दृष्टिकोण से किया है। प्लेटो से ग्रहण करते हुए भी अरस्तू ने भिन्न अर्थ में इसका प्रयोग किया है। उन्होंने इस शब्द का प्रयोग काव्यशास्त्र (Poetics), राजनीतिशास्त्र (Politics), भौतिकशास्त्र (Physics), अध्यात्मशास्त्र (Metaphysics) आदि कई प्रबन्धों में किया है। अनुकरण संबन्धी उनकी अवधारणा निम्निलिखित रूपों में पायी जाती है।

- अनुकरण की परिभाषा (अनुकरण से अरस्तू का अभिप्राय)
- अनुकार्य अथवा अनुकरण का विषय
- कवि अनुकरण एवं काव्य-सत्य
- भारतीय अनुकरण सिद्धांत से तुलना

अनुकरण की परिभाषाः-

अनुकरण संबन्धी परिभाषाएँ अधिकांश युगीन साहित्य धाराओं के अनुरूप हुई हैं। अरस्तू का मिमेसिस से तात्पर्य प्रकृति अथवा जगत् के बाह्य स्थूल अर्थात् गोचर रूप (पेड-पौधे, नदी, तालाब, आकाश, पशु-पक्षी आदि) के साथ ही मनुष्य की अंतः प्रकृति अर्थात् उसकी नैसर्गिक वृत्तियों एवं मनोभावों आदि के अनुकरण से था। अनुकरण का अर्थ वे नकल (copy) करना नहीं मानते थे। बल्कि उनका अनुकरण सृजनात्मक क्रिया है। 'भौतिकशास्त्र' में उन्होंने लिखा है- 'सामान्यतः कला, अंशतः प्रकृति की अपूर्णता को पूरा करती है और अंशतः उसका (प्रकृति का) अनुकरण करती है। अतः अरस्तू के अनुसार यदि काव्य प्रकृति का अनुकरण है तो भावनामय अनुकरण है, कोरी नकल नहीं।

अनुकार्य अथवा अनुकरण का विषयः-

अरस्तू के अनुसार काव्य विषय के 3 रूप हैं प्रतीयमान रूप, संभाव्य रूप और आदर्श रूप। प्रतीयमान रूप में अनुकरण की यांत्रिकता का आरोप लगाया जा सकता है। मगर संभाव्य और आदर्श रूप में अनुकरण का सर्जनात्मक पक्ष ही सामने आता है। जबकि कवि में सर्जना की शक्ति नहीं होती, वह संभाव्य एवं आदर्श रूप का चित्रण नहीं कर सकता। अरस्तू के विचार से काव्य का उद्देश्य आनंद प्रदान करना एवं अपने ढंग से उपदेश देना है। काव्य इन दोनों उद्दोश्यों की पूर्ति करते हुए जीवन के सत्य का उद्‌घाटन करता है। उनके विचार से काव्य रचना दो कारणों से होती है। मनुष्य के अनुकरण की प्रवृत्ति और अनुकरणात्मक कार्यों और रचनाओं में उनकी अभिरूचि है।

कवि अनुकरण एवं काव्य-सत्यः-

प्लेटो की भाँति अरस्तू मानते हैं कि अनुकरण से कलाकार को सुखानुभूति होती है। समन्वय अथवा सामंजस्य, लय अथवा ताल के प्रति अनुराग मनुष्य की नैसर्गिक प्रवृत्ति है। यह वृत्ति ध्वंद और लय के रूप में काव्य में प्रकट होती है। उनके अनुसार कवि विश्वव्यापी और चिरस्थायी सत्य का उद्‌घाटन करते हैं। काव्य सत्य के संबन्ध में अपने विचारों को सिद्ध करने केलिए अरस्तू ने कविता और इतिहास पर तुलनात्मक दृष्टि से विचार किया है। इतिहासकार केवल घटित घटनाओं का लेखक होता है तो कवि उन घटनाओं का भी संयोजन करता है जो घटित हो सकें। इसलिए काव्य में दर्शन तत्व अधिक होता है। इतिहास सत्य का तथ्यपरक ऊपरी रूप प्रकट करते समय काव्य और दर्शन सत्य की सूक्ष्म मीमांसा करते हैं। इसलिए काव्य सार्वदेशिक और सार्वकालिक बन जाते हैं।

भारतीय अनुकरण सिद्धांत से तुलनाः-

काव्य एवं कला को अनुकरणात्मक मानने की धारणा विश्व साहित्य में अति प्राचीन है। अरस्तू का अनुकरण संस्कृत के भरतमुनी एवं धनंजय के अनुकरण सिद्धांत से मेल खाता है। वे अनुकरण को नकल नहीं मानते थे। अरस्तू से भी गंभीर अर्थ में वे अनुकरण को ग्रहण करते थे। अतः अरस्तू की तुलना में भारतीय मनीषियों की अनुकरण संबन्धी धारणा अतिव्यापक, गहन एवं सूक्ष्म है।

निष्कर्षतः- अनुकरण को काव्य का मूल व्यापार मानते हुए भी अरस्तू विषय माध्यम और उसकी विधि के अनुसार काव्य के रूप में विभिन्नता को लाये।

प्र. अरस्तू का विरेचन सिद्धांत (Theory of Catharsis)

उ. विरेचन सिद्धांत का उल्लेख अरस्तू ने अपने ग्रंथ 'पोइटिक्स' में त्रासदी के विवेचन के प्रसंग में किया है। 'विरेचन' यूनानी वैद्यशास्त्र का शब्द है, जिसका अर्थ है- औषधि द्वारा उदर विकारों की शुद्धि करना। रेचक औषधि ऐसे शारीरिक विकारों की शुद्धी करती है। त्रासदी विरेचन के माध्यम से मन के विकारों का शमन करती है। अरस्तू के अनुसार काव्य मनोवेगों को असंयमित नहीं करता बल्कि मन को शुद्ध करता है। मन के इस शुद्धीकरण के प्रक्रिया को प्रस्तुत करनेवाला सिद्धांत है विरेचन सिद्धांत।

विरेचन सूत्र के द्वारा अरस्तू ने यह स्पष्ट कर दिया कि कविता और विशेष रूप से त्रासदी भय, करुणा की भावनाओं और वासनाओं को उभारती और उत्तेजित नहीं करती, वरन् ये भावनाएँ हमारे भीतर भरी हुई हैं। मौके-बेमौके उभरकर हमारे सामाजिक जीवन और व्यवस्था में समस्यायें पैदा करके कष्ट देती हैं। विकार का रेचन हो जाने से हमें राहत मिलती है और उदात्त रूप में रहकर हमें आनंद प्रदान करती है। कविता हमारी वासनाओं को जगाती और उत्तेजित करती है, पर उनके परिष्कृत रूप में। कविता या नाटक के पात्रों के बीच इन उत्तेजित वासनाओं और उनके दुष्परिणामों का हमारे शरीर और जीवन से सीधा संबन्ध न होने से, ये वासनाएँ परिष्कृत संवेदनाओं का रूप ग्रहण करती हैं। यही भावों का विरेचन है। कविता का यही वास्तविक प्रभाव और कार्य होता है। अरस्तू का यह दृष्टिकोण वास्तव में सौंदर्यवादी है।

अरस्तू के इस विरेचन या कैथार्सिस (Catharsis) के सिद्धांत की अन्य लोगों ने भी व्याख्या की है। कुछ लोग यह मानते हैं कि त्रासदी का आनंद शहत या निष्कृति का आनंद है। वह 'आर्ट ऑफ रिलीफ' से प्राप्त है। जबकि अन्य सुखमय भावों के प्रदर्शन की कला, आनंद की कला है। वह 'आर्ट ऑफ डिलाइट' है। कैथार्सिस या विरेचन का उद्देश्य यही आनंदप्रद राहत है (Delightful relief)। धर्मपरक अर्थ लेनेवाले विरेचन को मन की उत्तेजना और अंत में उसके शमन के द्वारा होनेवाली आत्मिक शुद्धी से जोडते हैं। कलात्मक अर्थ को ढूँढनेवालों केलिए विरेचन कलात्मक स्तर पर होनेवाली अभिव्यंजना से जनित व्यापार है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से त्रास और करूणा दोनों ही दुःखमूलक भाव है।

इस प्रकार Catharsis या विरेचन साधारणीकरण की प्रक्रिया से मेल खाता हुआ भी इससे भिन्न और गहरे धरातल पर विरेचन की विशिष्टताओं को निम्नलिखित प्रकार से देखा जा सकता है:-

- विरेचन त्रासदी द्वारा ही हो सकता है।
- इसकेलिए भय और करुणा के भावों का सम्यक् नियोजन और प्रदर्शन आवश्यक है।
- घटनाओं तथा नायक के चलन में बडी सावधानी अपेक्षित है।

- विरेचन यद्यपि दुःखात्मक परिस्थितियों और घटनाओं के प्रदर्शन से होता है; परन्तु उसके परिणति सुखात्मक अनुभूति से होती है।
- इससे कलात्मक आनन्दानुभूति, आत्मपरिष्कार से नैतिक बल तथा धार्मिक संतुष्टि की प्राप्ति होती है।

वस्तुतः अरस्तू ने त्रासदी के विभिन्न पक्षों पर विचार करते हुए उसे उद्देश्य विशेष से युक्त रचना के रूप में प्रस्तुत किया है। समस्त कार्यव्यापारों की गहराई में त्रास और करुणा की स्थितियों को उभारकर विरेचन की प्रक्रिया को लाना ही अरस्तू का लक्ष्य रहा है। इसलिए अरस्तू की मान्यताएँ आज भी स्वीकार्य हो जाती हैं।

प्र. औदात्य सिद्धांत पर प्रकाश डालिए।

उ. अरस्तू के उपरान्त लोंजाइनस यूनान के एक महान् विचारक और काव्यशास्त्री माने जाते हैं। काव्य में उदात्त तत्व की महत्ता पर सबसे पहले व्यवस्थित रूप में विचार करनेवाले लोंगिनुस ईसा की तीसरी शताब्दी में जीवित आचार्य थे। अपने ग्रंथ 'पेरिइप्सूस' में उन्होंने उदात्त का विस्तृत विवेचन किया है। इसमें उन्होंने 2 भागों में अपने सिद्धांतों को स्पष्ट किया है। प्रथम भाग में उदात्त शैली का विवेचन है और द्वितीय भाग में कला के आधार भूत तत्वों पर प्रकाश डाला गया है। लोंजाइनस के विवेचन में वस्तु तत्व की अपेक्षा आत्मतत्व की प्रधानता है।

उदात्त तत्व की व्याख्या लोंजाइनस ने कम शब्दों में की है। 'औदात्य अभिव्यक्ति की विशिष्टता और उत्कृष्टता को कहते हैं।' (Sublimity is a certain distinction and excellence in expression) रचनाकार की व्यक्ति चेतना को भी लोंजाइनस ने महत्व प्रदान किया है। इसलिए उन्होंने कहा- 'उदात्त महान् आत्मा की प्रतध्वनि है।' (Sublimity is the ecco of the great soul) लोंगिनुस ने उत्कृष्ट काव्य की विशेषताओं को अपने ढंग से प्रस्तुत किए हैं। उत्कृष्ट काव्य की भाषा और उसके अलंकारों पर विचार करते समय यह स्पष्ट किया है कि निर्दोष शब्द योजना से कोई कृति उत्कृष्ट नहीं हो सकती। उन्होंने उदात्त के पाँच तत्व माने हैं:-

- उदात्त विचार
- गंभीर आवेग
- समुचित अलंकार योजना
- उदात्त भाषा
- गरिमामयी रचना विधान

इनमें से प्रथम दोनों विचार और आवेग नैसर्गिक तत्व हैं और शेष कला से उत्पन्न तत्व है। परन्तु प्रथम दोनों को अंतरंग और बादवाले को बहिरंग मानकर इनको परस्पर संबन्ध माना है। यहाँ लोंजाइनस ने सामंजस्य को महत्व दिया है। दूसरे शब्दों में औदात्य न तो सर्वथा प्रतिभा सापेक्ष है और न अभ्यास सापेक्ष। औदात्य एक भाव है, विचार है और शैली भी है। उसकी सत्ता रचना की वस्तुपक्ष से शैली पक्ष तक व्याप्त है। इसका संबन्ध कला से मात्र नहीं, कलाकार से भी है। कलाकार के व्यक्तित्व और शैली में औदात्य

होता है। उदात्त विचार एवं प्रेरणाप्रसूत उद्गाम आवेग को लोंगिनुस ने 'मन की ऊर्जा' कहा है। सभी प्रकार के आवेग को लोंगिनुस उदात्त के पोषक नहीं मानते हैं। दया, शोक और भय उनके अनुसार उदात्त के पोषक नहीं होते। क्योंकि ये चेतना को संकोच कर देता है। अतः मन की ऊर्जा के बाधक है।

लोंजाइनस नैसर्गिकता के साथ कवि कर्म के नियमों का भी पालन अनिवार्य मानते हैं। उनके अनुसार कविकर्म अनेक बातों का समन्वय है। सहज रूप से अलंकारों का प्रयोग होना चाहिए। भाषा सुन्दर शब्दों से युक्त होनी चाहिए। सामंजस्यपूर्ण शब्दों के विशेष क्रम को शैली की संज्ञा दी गई है। शैली का लक्ष्य श्रोता को प्रसन्न करना होता है। इस प्रकार अलंकार, भाषा और शैली के पक्षों को नैसर्गिक चेतना के साथ लोंगिनुस ने जोडा है। उदात्त के विरोधी तत्वों पर भी इन्होंने प्रकाश डाला है।

- बालेयता
- भावाडम्बर
- शब्दाडम्बर
- भाषा का अस्तव्यस्त प्रवाह
- अभिव्यक्ति की संक्षिप्तता
- अभिव्यक्ति की क्षुद्रता

बालेयता अप्रौढ़ रचना में दिखाई पडता है। इसमें गरिमा का अभाव होता है। कृत्रिमता और चमत्कार को प्रस्तुत करने के परिणाम स्वरूप बालेयता जन्म लेता है। अवसर केलिए अनुपयुक्त आवेग का प्रदर्शन भावडम्बर को जन्म देता है। अत्युक्तिपूर्ण शब्दावली से शब्दाडम्बर उदात्त के विरोधी बन जाता है। भाषा का अस्तव्यस्त प्रवाह लयपूर्ण रचनाओं में पाया जाता है। अभिव्यक्ति की संक्षिप्तता एवं अभिव्यक्ति की क्षुद्रता को लोंगिनुस दोष मानते हैं। इसलिए उदात्त के विरोधी बन जाते हैं। क्षुद्र अर्थ के वाचक शब्दों का प्रयोग, विषय गौरव के प्रतिकूल शब्द का प्रयोग, प्रसंगविरूद्ध शब्द आदि इसके उदाहरण हैं।

इस प्रकार लोंजाइनस ने उदात्त के सभी पक्षों को बडे ही सूक्ष्म दृष्टि से परखने की कोशिश की है। लोंगिनुस के काव्य संबन्धी विचार और उदात्त की व्याख्या आज भी प्रासंगिक है।

प्र. वर्डसवर्थ की काव्यशास्त्रीय आलोचना पद्धति पर प्रकाश डालिए।

उ. विलियम वर्डसवर्थ रूमानी युग के प्रवर्तक कवि और आलोचक हैं। आभिजात्यवादी सिद्धांतों से काव्य की मुक्ति का प्रारंभ उनके आगमन के साथ होता है। यदि 1798 में वर्डसवर्थ और कॉलरिज द्वारा प्रकाशित 'लिरिकल बैलड्स' पर एडिनबर्ग और क्वार्टरली पत्रिकाओं में नवशास्त्रवादी समीक्षकों ने कठोरतम प्रहार न किये होते तो संभवतः वर्डसवर्थ ने अपनी आलोचक मान्यताओं को कलमबद्ध भी न किया होता।

वर्डसवर्थ ने कवि के व्यक्तित्व को कई परिप्रेक्ष्य में देखने का प्रयास किया। उन्होंने परंपरावादी विचारों का विरोध करते हुए कवि को केन्द्र बनाया है और कवि की रचनात्मकता को काव्य का आधारतत्व माना। कवि का व्यक्तित्व, कविता की रचना प्रक्रिया, भाषा, कविता की छन्द योजना और प्रयोजन पर विस्तारमूलक विचार किया है।

➢ कवि का व्यक्तित्वः-

वर्डसवर्थ के अनुसार कवि सामान्य व्यक्ति की अपेक्षा अधिक संवेदनशील होता है। कवि को दैवी आवेश से प्रभावित व्यक्ति न मानकर उसे अभिव्यक्ति की अर्जित शक्ति से संपन्न संवेदनशील व्यक्ति के रूप में उन्होंने माना है। साधारण व्यक्ति से कवि का संबन्ध जोडते हुए उन्होंने कहा है कि कवि कवियों केलिए नहीं, जनसाधारण केलिए लिखते हैं।

➢ कविता की रचना प्रक्रियाः-

कविता के उद्देश्य, विषय, स्वरूप और भाषा को लेकर वर्डसवर्थ ने जो कुछ लिखा है, उसमें विशिष्ट से उतरकर सामान्य के निकट आने की उनकी प्रवृत्ति स्पष्ट झलकती है। 'लिरिकल बैलड्स' की भूमिका में वर्डसवर्थ ने कविता की परिभाषा इस रूप में दी है- 'कविता बलवती भावनाओं का सहज उच्छलन होती है। शान्त अवस्था में भाव के स्मरण से उसका उद्भव होता है। (Poetry is the spontaneous overflow of powerful feelings which take its origin from emotions recollected in trianquility) ऐसी मनोदशा में सफल रचना का सूत्रपात होता है। इस प्रकार भावप्रधान कविता के माध्यम से पाठक को आनंद प्रदान करना कवि का कार्य है।

➢ काव्य भाषाः-

काव्य भाषा पर गंभीर रूप से वर्डसवर्थ ने विचार किया है। उनका मत है कि कविता की भाषा जनता की भाषा होनी चाहिए। परन्तु चयन के आधार पर भाषा को परिष्कृत करने की बात भी कही है। पद्य और गद्य की भाषा में वे अंतर नहीं मानते थे। उनका उद्देश्य इस भाषा के माध्यम से पाठक को जीवन के निकट लाना है। उनका तर्क यह है कि श्रेष्ठ कविताओं के सबसे रोचक हिस्सों की भाषा सुलिखित गद्य की भाषा के समान होती है।

➢ छन्दों की विशिष्टताः-

वर्डसवर्थ ने छंद के महत्व को स्वीकार किया है। उनके अनुसार छन्द को समुचित, नियमित और एकविध् होना चाहिए। करूणा और दुःख से भरी हुई स्थितियों को उभारने में छन्दमयी रचना अधिक उपयोगी होती है। लययुक्त पद्य इसकेलिए उचित उदाहरण है। छन्द को उपयोगी मानते हुए भी वर्डसवर्थ ने कविता और गद्य की भाषा में तात्विक अंतर नहीं किया।

➢ काव्य प्रयोजनः-

वर्डसवर्थ की मान्यता है कि प्रत्येक महाकवि शिक्षक होता है। अतः उनका काव्य प्रयोजन काव्यानन्द के माध्यम से उपदेश देना है, जनहित करना है। उनकी दृष्टि में प्रकृति

से प्राप्त विशुद्ध आनन्द की अनुभूति मूल्यवान् है। इस आनन्द को प्राप्त करने केलिए कवि को ख्रास दृष्टि की ज़रूरत है। काव्य को वर्डसवर्थ ने सत्यान्वेषण का साधन भी माना है। उनकी धारणा है कि काव्य प्रणीत सत्य, विज्ञान प्रणीत सत्य से कहीं अधिक भव्य और व्यापक होता है। ज्ञान और आनन्द के साथ सत्य और सौदर्य को भी उन्होंने जोडा है।

वस्तुतः वर्डसवर्थ ने कविता को, उसकी रचना प्रक्रिया और अनुभूति प्रवणता को कई दृष्टियों से आयामित किया है। इस प्रकार वर्डसवर्थ ने शास्त्रवादी और नवशास्त्रवादी श्रृंख्रलाओं को तोड, काव्य निर्णय संबन्धी स्वतंत्र विचारधारा का उद्घोष कर स्वच्छन्दतावाद को पुनरुज्जीवित किया।

प्र. कॉलरिज का कल्पना सिद्धांत

उ. वर्डसवर्थ के समान कवि और रूमानी आलोचक के रूमानी आलोचक के रूप में कॉलरिज ने भी ख्याति प्राप्त की थी। उनका समीक्षात्मक विवेचन प्रमुख्रतः दो विषयों पर केन्द्रित होता है। उत्कृष्ट काव्य का विवेचन और कल्पना शक्ति का विवेचन। इन दोनों विषयों के संबन्ध में मौलिक ढंग से कॉलरिज ने विचार प्रस्तुत किए। कॉलरिज के पहले की आलोचना में कवि की शक्ति विशेष की चर्चा होती रही। जिसकी सहायता से वह विविध विचारों या प्रत्ययों को संयोजित करके नए बिंबों को निर्मित करता है। इस शक्ति केलिए कल्पना (imagination) और ललित कल्पना (fancy) का प्रयोग होता रहा। ड्राइडन ने दोनों का प्रयोग fancy या ललित कल्पना के अर्थ में किया था। साथ ही उन्होंने इस शक्ति को उच्छृंख्रल माना था और विवेक या ज्ञान आदि द्वारा इसके नियंत्रण की चर्चा की थी। मगर कॉलरिज ने ललित कल्पना तथा कल्पना का अंतर स्पष्ट एवं वैज्ञानिक रूप से किया जो कि परवर्ती आलोचना केलिए मान्य हो गया। उच्चतर धरातल पर प्रतिष्ठित करने का श्रेय कॉलरिज को ही दिया जाता है।

कॉलरिज के अनुसार मन के व्यापार की दो अनिवार्य क्रियाएँ हैं- विश्लेषण और संश्लेषण। विश्लेषण द्वारा हम ऐन्द्रिय ज्ञान को उसके घटक तत्व गुण आदि में विभाजित करते हैं। संश्लेषण द्वारा उन विश्लेषित गुणों या तत्वों का संयोग करके नए बिंबों का निर्माण करना मानसिक व्यापार है। इस प्रकार संश्लेषित किए जानेवाले बिंब कभी सार्थक, क्रमबद्ध और सरस होते हैं। कॉलरिज ने इस प्रक्रिया को कल्पना कहा। कभी-कभी संश्लेषण द्वारा प्राप्त होनेवाले बिंब उच्छृंख्रल और हास्यास्पद होते हैं। दिवास्वप्न को जन्म देनेवाली इस प्रक्रिया को कॉलरिज ने ललित कल्पना का नाम दिया है।

ललित कल्पना निम्न प्रकार की शक्ति है जिसका प्रयोग व्यक्तिगत जीवन में होता है। किसी सार्थक आस्वाद बिंब का निर्माण वह नहीं कर सकती। परन्तु कल्पना आत्मा की शक्ति है, जो दिव्य होने के साथ-साथ सर्जनात्मक भी है। कल्पना द्वारा निर्मित बिंबों में संबद्धता होती है। इस प्रकार उन्होंने कल्पना को ललित कल्पना से उच्चतर धरातल पर प्रतिष्ठित किया है। कल्पना के दो भेद उन्होंने किये हैं- 1 मुख्य कल्पना (प्राथमिक कल्पना) और 2 गौण कल्पना (कला विधायनी कल्पना)।

मानव मात्र में पायी जानेवाली कल्पना को कॉलरज ने मुख्य कल्पना (Primary imagination) कहा है और कवि की कल्पना को गौण कल्पना (Secondary imagination) का भी नाम दिया है। दोनों सर्जनात्मक है। कॉलरिज के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में कविता लिखने की शक्ति होती है। किसी में अधिक, किसी में कम। जैसे सुनार सोने को गलाकर उसे विविध आभूषणों में रूपान्तरित करता है। उसी प्रकार प्राथमिक कल्पना द्वारा प्रस्तुत उपादानों को कलाविधायनी कल्पना नूतन रूप में बदलकर कलाकृति की सृष्टि करती है। कल्पना शक्ति को दार्शनिक स्तर पर प्रस्तुत करते हुए कॉलरिज ने कहा है कि ईश्वरीय कल्पना अनंत और विराट सृष्टि का निर्माण करता है। सीमित सत्ता के कारण व्यक्ति सीमित कल्पनाओं के अंदर ही रह जाता है।

वस्तुतः कॉलरिज ने अपनी उद्भावनाओं के सहारे रूमानी आलोचना के सिद्धांतों को और भी मज़बूत करने की कोशिश की है। कॉलरिज एक उच्चकोटि के कवि और गंभीर चिंतक थे। उनकी आलोचना उनके कवि व्यक्तित्व और चिंतन व्यक्तित्व के समन्वित प्रयास की परिणति है।

प्र. क्रेचे के अभिव्यंजनावाद पर प्रकाश डालिए।

उ. पाश्चात्य काव्यशास्त्र परंपरा में अभिव्यंजनावाद का महत्वपूर्ण स्थान है। अतीन्द्रिय चेतना के स्तर पर कला के स्वरूप का विवेचन इसमें मिलता है। यह विवेचन अभिव्यंजनावाद के आधार पर कला एक विशुद्ध सौन्दर्य-प्रधान आत्मिक क्रिया प्रमाणित होती है।

क्रोचे ज्ञान के 3 प्रकार मानते हैं- इन्द्रिय ज्ञान, बौद्धिक ज्ञान और अर्न्तज्ञान। उनका विचार है कि सौंदर्यपरक ज्ञान तार्किक ज्ञान से भिन्न है। वह सहज ज्ञान या सहजानुभूति है। उसका संबन्ध कल्पना और अनुभूति से है जबकि अन्य ज्ञानों का संबन्ध बुद्धि से है। क्रोचे ने कला का संबन्ध अर्न्तज्ञान से माना है। वह एक विशेष प्रकार के आनंद को प्रदान करती है। क्रोचे के अनुसार अर्न्तज्ञान और अभिव्यंजनावाद में अभेद है। कवि की चेतना में बिंबों का उदय अभिव्यंजना है और यही अर्न्तज्ञान है। प्रत्येक अर्न्तज्ञान कला है। क्रोचे के अनुसार व्यक्ति का प्रकाश, चित्र, शब्द, संगीत या अन्य किसी रूप में क्यों न हो अंर्तज्ञान अभिव्यंजना का कोई न कोई रूप ढूँढ लेता है। बाह्य अभिव्यक्ति को क्रोचे अभिव्यंजना का अंश नहीं मानते हैं।

क्रोचे के विचार से अभिव्यंजना, कला या काव्य एक सौंदर्य सृष्टि है। इसकी सृजन प्रक्रिया की चार अवस्थाएँ हैं। प्रथम अवस्था अंतः संस्कार या कल्पना पर पडे प्रभाव की, द्वितीय मानसिक सौंदर्यात्मक संश्लेषण की, तृतीय सौंदर्यानुभूति के आनंद की तथा चतुर्थ अभिव्यक्ति या शारीरिक क्रिया के रूप में रूपान्तरण की है। (ध्वनि, स्वर, रंग, रेखा आदि के रूप में प्रकटीकरण की) ये चार अवस्थाएँ, जिनकी सहजानुभूति या अभिव्यंजना के साथ निर्बाध रूप से पूर्ण या सफल होती है; वही बडा कवि या कलाकार होता है।

क्रोचे के विचार से बाह्य पदार्थों का इतना महत्व है कि वे कल्पना में बिंब उत्पन्न करने में सहायक होते हैं। प्रकृति का महत्व इसी रूप में है कि वह कल्पना में बिंबों की सृष्टि में सहायक है। उनकी दृष्टि में काव्य या कला का प्रयोजन अभिव्यंजना मात्र में पूर्ण

हो जाता है। उनके विचार से काव्य और कला एक ही कोटि की है। सौंदर्य व्यक्तिकल्पना की वस्तु है और कवि या कलाकार अपने अर्न्तजगत् की वस्तु को ही प्रकाशित करता है; बाह्य वस्तु को नहीं। बाह्य वस्तु अर्न्तमन में आए बिना कला का रूप धारण ही नहीं कर सकती। सौंदर्य की सृष्टि अन्तस् में होती है। कला या अभिव्यंजना एक मानसिक क्रिया है। इसलिए क्रोचे ने इसे सहजानुभूति या सहजज्ञान के रूप में स्वीकार किया है।

क्रोचे के विचार से सहजज्ञान या अभिव्यंजना पहली सीढ़ी है। विचार विज्ञान या बुद्धिजन्य ज्ञान द्वितीय सीढ़ी है। अभिव्यंजना विचार के बिना हो सकती है। परन्तु विचार अभिव्यंजना के बिना नहीं। अभिव्यंजना के 2 पक्ष लक्षित होते हैं- वस्तु और रूप। क्रोचे वस्तु को बहिर्गत मानते हैं और रूप को आत्मा की क्रिया। अभिव्यंजना की व्याख्या बिंब की व्याख्या के काफी निकट पडता है। बिंब में वस्तु या सामग्री है जो बहिर्जगत् से आती है तथा कवि कल्पना उस सामग्री को एक ख्रास रूप से संयोजित करती है। उदाहरण केलिए उषा, संध्या वर्षा आदि प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन अनेक बिंबों के रूप में काव्य में मिलता है।

क्रोचे अभिव्यंजना को एक समग्र कार्य मानते हैं। अलंकार को काव्य का अनिवार्य अंश मानते हुए भी भाव, विचार आदि से श्रेष्ठतर नहीं मानते। क्रोचे ने अनुवाद को असंभव माना है। कवि की अभिव्यंजना ही कला है और अनुवादक के मन में वह अभिव्यंजना नहीं हो सकती। क्योंकि क्रोचे के मन में बाह्य अभिव्यंजना के माध्यम से किसी अभिव्यंजना को ग्रहण नहीं किया जा सकता है।

समग्रतः कहा जा सकता है कि क्रोचे का अभिव्यंजनावाद आत्मा की अभिव्यक्ति से संबद्ध है। पर यह मूलतः सैद्धांतिक ही है। जो दर्शन से संबद्ध है, यह विचार सौंदर्य चिंतन का आधार लेकर अधिक व्यापक पृष्ठभूमि पर प्रतिष्ठित हुई है। क्रोचे ने अभिव्यंजना को अंतरंग बताया है जो स्वयं में कला और साहित्य की चरम परिणति है।

प्र. रिचर्ड्स की साहित्यालोचना का सिद्धांत।

उ. पाश्चात्य आलोचना को वैज्ञानिक आधार पर प्रतिष्ठित करने का श्रेय आई. ए. रिचर्ड्स को दिया जाता है। वे मनोविज्ञान के क्षेत्र से साहित्य में आए। अतः उन्होंने मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में कला और कविता की सार्थकता और महत्व पर अपने विचार प्रकट किए। उनके अनुसार आज जब प्राचीन परंपराएँ टुट रही है और मूल्य विघटित हो रहे हैं, तब सभ्य समाज कला और कविता के सहारे ही अपनी मानसिक व्यवस्था और संतुलन बनाए रख्र सकता है। रिचर्ड्स के अनुसार साहित्यालोचना का सिद्धांत दो स्तंभों पर केन्द्रित है। मूल्य का लेख्रा-जोख्रा और संप्रेषणीयता का आकलन। इन्हीं दो गुणों के आधार पर रिचर्ड्स ने मूल्य सिद्धांत और संप्रेषणीयता के सिद्धांतक की स्थापना की।

- मूल्य का सिद्धांतः- कविता का मूल्य उसकी पाठक या श्रोता को प्रभावित करनेवाली क्षमता से आँका जाता है। कला या कविता का काम मन को संतुलित करता है। काव्य और कलाएँ मन के आवेगों में संतुलन स्थापित करती है और स्नायुमण्डल को सुख्र भी पहुँचाती है। सौंदर्य इसलिए मूल्यवान् है, क्योंकि यह विरोधी मनोवेगों में उत्पन्न विषमता में व्यवस्था और संतुलन कायम करता है। रिचर्ड्स के अनुसार आवेग

की दो स्थितियाँ है- काम्य आवेग और अकाम्य आवेग। ये दोनों मस्तिष्क में संतुलित रूप में रहती है, फिर भी काम्य आवेग में स्थिरता, संतुलन और व्यवस्था स्थापित करने की शक्ति है। वे अधिक महत्वपूर्ण है। कविता और कला विशिष्ट सीमित अनुभवों के पूर्ण एवं व्यवस्थित विकास में योगदान देती है। वे हमारी अनुभूतियों और संवेदनाओं को व्यापक बनाकर मानव-मानव के बीच संवेदनात्मक एकता स्थापित करती है। संतुलन या समन्वय रिचर्ड्स के अनुसार काव्य का गुण है। यही इसका मूल्य है। इस संतुलन को रिचर्ड्स सिनेस्थीसिस (Synaesthesis) कहा है।

- संप्रेषण सिद्धांतः- संप्रेषण रिचर्ड्स के आलोचना सिद्धांत का दूसरा स्तंभ है। संप्रेषण क्रिया का सर्वाधिक उपयोग कला कर्म में होता है। जिस तन्मयता से कलाकार अपनी रचना करता है, उसकी संप्रेषणीयता उतनी ही प्रभावकारी होती है। कवि की संप्रेषणीयता वही है जबकि पाठक में भी कवि की संवेदना जग जाए। रिचर्ड्स के अनुसार संप्रेषण तब होता है जब दूसरे मन में जो अनुभूतियाँ जागृत हों वे पहले मन की अनुभूतियों के समान हों और आंशिक रूप से पहले के द्वारा प्रेरित हों। इस प्रकार देखे तो संप्रेषण एक जटिल प्रक्रिया है। कलाकार का अनुभव विशिष्ट और नव्य होने के कारण उसकी संप्रेषणीयता समाज केलिए मूल्यवान है।

रिचर्ड्स ने शास्त्र एवं काव्य की भाषा में अंतर करते हुए कहा है कि भाषा के दो रूप हैं- सांकेतिक और भावोद्बोधना। सहृदय के मन में भावों को जगाने के प्रयोजन से की गई भाषा का प्रयोग भावोद्बोधक प्रयोग कहलाता है। काव्य भाषा में रिचर्ड्स ने 4 तत्वों को प्रमुख माना है- वस्तुबोध, मनोवेग, ध्वनि और अभिप्राय। श्रेष्ठ काव्य की रचना में इन चारों गुणों की योजना सहज भाव से रहती है।

कल्पनाशक्ति और उसके कार्य को भी रिचर्ड्स महत्व देते हैं। उनके अनुसार कल्पना शक्ति के 6 गुण है।

- कविता में चाक्षुक्ष बिंबों का निर्माण कल्पना द्वारा होता है। इन बिंबों को जगानेवाली भाषा, भाषा का भावोद्बोधक प्रयोग है।
- कवि स्वानुभूति के साथ लोकानुभूति को भी चित्रित करता है। याने कल्पना के सहारे कवि अन्य व्यक्ति के परिवेश के परिस्थितियों का चित्रण तन्मयता से कर पाता है।
- भाषा का अलंकरण कल्पना का तीसरा कार्य है। विशिष्ट शब्दों, छंद एवं लय, अलंकारों का प्रयोग आदि इसमें शामिल है।
- कल्पना का उपयोग रचना के विविध तत्वों के सामंजस्य में भी होता है। इसमें विचार, दृश्य, घटना, भाव आदि का शब्द, प्रतीक, नाद, लय आदि से समन्वय कल्पना के द्वारा होता है।
- कल्पना का प्रयोग काव्य के साथ विज्ञान तथा दर्शन के क्षेत्र में भी अनिवार्य है।
- शब्द और अर्थ का विचार और भाव में समन्वय स्थापित करता है।

वस्तुतः रिचर्ड्स ने मनोविज्ञान के सिद्धांतों के आधार पर काव्य के विविध पक्षों का आलोचनात्मक अध्ययन किया।

प्र. टी. एस. इलियट के समीक्षा सिद्धांत का विवेचन कीजिए। अथवा इलियट का निर्वेयक्तिकता सिद्धांत?

उ. टी. एस. इलियट कवि एवं नाटककार होने के साथ साथ आलोचक भी थे। आलोचना के क्षेत्र में पश्चिमी विचारों को अत्याधिक परिवर्तित करने का श्रेय इलियट को प्राप्त है। वे प्राचीन मान्यताओं की पुनःस्थापना करनेवाले चिंतक थे। उन्होंने अपने प्रसिद्ध लेख 'परंपरा और वैयक्तिक प्रतिभा' (Tradition and individual talent) में अपने विचार व्यक्त किए हैं। इसमें उनकी मान्यता है कि कलाकार या कवि की प्रगति परंपरा का विकास तथा निर्वयक्तिकरण से ही होती है। रोमांटिक सिद्धांत का विरोध करते हुए उन्होंने घोषणा की 'कविता कवि व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति नहीं, व्यक्तित्व से पलायन है।' उन्होंने कवि की भूमिका की व्याख्या सर्जक के रूप मे नहीं, माध्यम के रूप में की। यहाँ इलियट का लक्ष्य व्यक्ति तत्व का निषेध और तिरस्कार नहीं होता, उसका निर्वेयक्तिकरण होता है।

इलियट कवि भाव और कविता के भाव में अंतर करते हैं। उनके अनुसार 'कविता का भाव निर्वेयक्तिक होता है। करणीय कर्म के प्रति अपने आपको पूरी तरह समार्पित करने पर कवि निर्वेयक्तिकता में पहुँच सकता है। इलियट कहते हैं कि कविता एक ऐसी वाचिक संरचना होती है, जिसके माध्यम से कवि के अभिष्ट मनोभावों का संप्रेषण होता है। इसकेलिए कवि वस्तुओं, स्थितियों और घटना श्रृंखला की सहारा लेता है। इसी माध्यम से कवि जो कुछ कहता है वह निजी न रहकर वस्तुनिष्ठ हो जाता है।

इलियट ने कविता को तीन स्वरों में व्याख्यायित किया है, जो वास्तव में काव्य की विधाएँ हैं। प्रथम स्वर वह है जिसमें कवि अन्य से नहीं स्वयं से बात करता है। इस प्रक्रिया के परिणाम स्वरूप जो रचनाएँ हमें प्राप्त होती है वह लिरिकल या प्रगति काव्य है। द्वितीय स्वर वह है जिसमें कवि श्रोताओं से बात करता है। इस प्रक्रिया के फलस्वरूप जो रचनाएँ प्राप्त होती है, वे महाकाव्य, प्रबन्धकाव्य, कथाकाव्य या नरेटीव के अंतर्गत रखी जाती है। तृतीय स्वर वह है जिसमें कवि का अर्न्तधान हो जाता है, और वह पात्रों या चरित्रों के माध्यम से बात करता है। इस विधि से जो रचनाएँ प्राप्त होती हैं वे नाटक विधा के अंर्तगत मानी जाती है। इसमें कवि व्यक्तित्व के तिरोभाव के साथ बढ़ती जाती है। परंतु श्रेष्ठ काव्य में तीनों की विशेषताएँ समाई रहती है।

कविता से प्राप्त आनंद या काव्यानुभूति के संबन्ध में भी इलियट ने निर्वेयक्तिकता की बात कही है। उनका विचार ह कि काव्य में कवि के वैयक्तिक भावों, उसके निजी अनुभवों की अभिव्यक्ति नहीं होती। काव्य का अनुभव अन्य सभी प्रकार के अनुभवों से भिन्न होता है। जब निजी भाव तिरोहित हो जाता है तब ये प्राप्त हो जाते हैं। कवि के मानस की तुलना वे ऐसे पात्र से करते हैं तो असंख्य अनुभूतियों, वाक्यांशों और बिंबों को पकडकर संग्रह करता रहता है। यह संग्रह एक नये मिश्रण की रचना केलिए विशेष रूप में संयुक्त होता है तो रचना सामने आती है। इस रचना में कवि का वैयक्तिक भाव पूर्णतः निर्वेयक्तिक होकर अभिव्यक्त होता है।

इस प्रकार इलियट के विचार में महान कला सदैव निर्वेयक्तिक होती है। इस अर्थ में कि व्यक्तिगत अनुभव विस्तृत होकर एक प्रकार के निर्वेयक्तिक में पूर्णता प्राप्त करते हैं। इस अर्थ में नहीं कि व्यक्तिगत अनुभव तथा मनोविकार से वे एकदम विच्छिन्न हो जाते हैं। अतः कला में कलाकार का आत्मत्याग और व्यक्तित्व का तिरोभाव घटित होता है। इस प्रकार इलियट ने उत्कृष्ट और महान् साहित्य की कसौटी प्रदान की तथा उसके सृजन की प्रेरणा भी। वह एक ऐसा चिंतक था जिसने व्यवस्थित सिद्धांत-निरूपण नहीं किया, पर अपनी पीढ़ी की रुचि और विचारों को बहुत दूर तक प्रभावित किया।

प्र. नयी समीक्षा (आलोचना) पर विचार कीजिए।

उ. नयी समीक्षा अमेरिका में बीसवीं शती के प्रथम चरण में ही प्रतिष्ठित हो गई थी। द्वितीय महायुद्ध के बाद वह यूरोप में भी महत्वपूर्ण बन गई। नई आलोचना टी. ई. हयूम, एज़रा पाउण्ड एवं टी. एस्. इलियट से प्रभावित एक अमेरिकी आलोचना आन्दोलन है। अमेरिका तथा ब्रिटन में बीसवीं शती के प्रारंभिक वर्षों में प्रचलित विभिन्न आलोचना संप्रदायों के सांप्रदायिक दृष्टिकोण के विरुद्ध प्रतिक्रियास्वरूप नई आलोचना का उद्भव हुआ। स्पिनगार्न को नई आलोचना के अग्रदूत माने जा सकते हैं। 1910 में कोलम्बिया विश्वविद्यालय में किये गये उनके भाषण का शीर्षक 'नई आलोचना (The New Criticism) था। वस्तुतः वह भाषण ही सर्वप्रथम नई आलोचना के श्रेय का प्रारंभिक प्रयास कहा जा सकता है। इस आलोचना का पूर्ण विकास 1930 और 1940 के बीच हुआ।

नई आलोचना के अंतर्गत किसी भी कृतिकार की कृति विशेष का निरपेक्ष एवं स्वतंत्र मूल्यांकन किया जाता है। अर्थात् कृतिकार के उद्देश्य और अभिव्यक्ति का सही मूल्यांकन ही नई आलोचना है। नयी समीक्षा को पूर्णतः प्रतिष्ठित करनेवाले जॉन को रेनसम ने कहा कि रिचर्ड्स से ही नयी समीक्षा की सही शुरुआत हुई। सन् 1941 में 'जॉन क्रो रेनसम' की 'नयी आलोचना' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई। यहीं से नयी समीक्षा को प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। रेनसम के अतिरिक्त 'एलेन टेट', राबर्ट पेनवॉरेन, आर. पी. ब्लैकमर, आइवर विंटर्स और क्लीथ ब्रुक्स नये समीक्षकों में प्रमुख माने जाते हैं। इन सभी समीक्षकों ने कविता पर पूरा ध्यान केन्द्रित करते हुए उसके भाषिक विश्लेषण पर बल दिया और उसकी अलग-अलग विशेषताओं को लक्षित किया।

नयी समीक्षा के उन्नायक और प्रतिष्ठापक काव्य भाषा के तात्विक विवेचन में एकमत नहीं है, किंतु नयी समीक्षा की मूल प्रतिज्ञा 'काव्य स्वतः वस्तु है' को लेकर उनमें पूर्ण सहमति है। नयी समीक्षा की आधारभूत बातें निम्नलिखित है:-

- काव्य, भाषिक संरचना मात्र है, इसलिए भाषा के सर्जनात्मक तत्वों का विश्लेषण ही समीक्षा का मुख्य धर्म है।
- ऐतिहासिक, समाजशास्त्रीय, दार्शनिक एवं मनोविश्लेषणवादी समीक्षाएँ अनावश्यक एवं अप्रासंगिक हैं।
- संप्रेषण और आस्वाद के प्रश्न पर विचार तथा मूल्यांकन का प्रयत्न आवश्यक नहीं है।

- रचना की आंतरिक संगति और संश्लिष्ट विधान के विवेचन-विश्लेषण केलिए उसका गहन पाठ नितान्त आवश्यक है।

सन् 1932 ई. तक आते-आते 'शिकागो स्कूल' के आलोचकों ने आर. एम. क्रेन के नेतृत्व में नये समीक्षकों का विरोध किया। इन्होंने प्रमाणित किया कि 'नयी समीक्षा' के औजारों से छोटी कविताओं का विश्लेषण भले ही कर लिया जाय, किंतु प्रबंध काव्यों, नाटकों और कथाकृतियों की समीक्षा केलिए वे बहुत उपयोगी नहीं हैं।

संक्षेप में नयी समीक्षा रचना या कविता को शुद्ध रूप में देखने की पक्षधर है। वह उसके स्वतंत्र अस्तित्व की स्थापना करती है तथा निरपेक्ष एवं रचनापरक अध्ययन को उभारना चाहती है। इसकी दृष्टि में काव्य भाषा का बडा महत्व है। भाषागत तथा कृति का गहराई से शब्द, गति, लय और उनकी विशिष्ट भंगिमा एवं उनकी स्थिति के सौंदर्य का अनुशीलन ही उसका लक्ष्य है। अतः इसका योगदान विशिष्ट और महत्वपूर्ण हैं।

प्र. उत्तराधुनिकतावाद (Post Modernism) क्या है? विश्लेषणात्मक उत्तर लिखिए।

उ. 'उत्तर आधुनिकता' आधुनिकता की तरह एक पाश्चात्य प्रत्यय है जो बहुआयामी है। पश्चिम में विशेष रूप से फ्रांस में साहित्य-संस्कृति और कला के क्षेत्र में अन्यान्य बौद्धिक विमर्श सामने आते रहते हैं। उत्तर आधुनिकता उन्हीं में से एक अत्यंत जटिल प्रत्यय है। समीक्षा, दर्शन आदि के रूप में उसका कोई निश्चित रूप अब तक निर्मित नहीं हो पाया है। कुछ विचारक इसे मार्क्सवादी दर्शन के रूप में देखते हैं। उत्तर आधुनिकतावादी विचारधारा आधुनिकतावादी अवधारणा के गर्भ से उत्पन्न होते हुए भी उसका अतिक्रमण है।

उत्तर आधुनिक व्यवस्था में कला-संस्कृति के घटक तर्कवादी सिद्धांत का विखंडन है, अथवा अब विखंडित करके ही समझे जाते हैं। प्रसिद्ध समाजशास्त्री मॅक्सबेबर समाज की एक ऐसी तर्क संगत व्यवस्था की खोज में थे जहाँ सामंतवादी व्यवस्था से आक्रांत, समाज दुःखों से मुक्त हो जाएगा। इसलिए प्रबोधन आधुनिकीकरण का अस्त्र बना। उत्तर आधुनिकता आधुनिकता की कोख से जन्मा वह परखनली शिशु है जो पुनः गर्भस्थ होकर अपनी माँ को ही काट रहा है। इस अर्थ में उत्तर आधुनिकता आधुनिकतावाद का चरम और निषेध है। आधुनिकता का चरमोत्कर्ष 'तकनीक', प्रौद्योगिकी सूचना विस्फोट, इलैक्ट्रानिक मीडिया-कम्प्यूटर आदि नाना विकासों के रूप में परिलक्षित हो रहा है। वस्तुतः आधुनिकता का यही चरमोत्कर्ष उत्तर आधुनिकता का प्रस्थान बिन्दु है।

किसी साहित्यिक कृति के निर्माण में अथवा पाठ संरचना में उत्तर आधुनिकता पूर्व निर्धारित नियमों पूर्व, परंपराओं की खोज और मूल्यांकन का निषेध करती है। इस अवधारणा के अनुसार हर कृति के अपने नियम होते हैं। कोई कृति एक घटना है। उसकी प्रस्तुति में ही अप्रस्तुति, भाव में ही अभाव केन्द्रित रहता है। बौद्रीआ ने उत्तर आधुनिकता पर अपने कई ग्रंथों में विचार किया है। 'उपभोग' के नाना रूपों और जटिल संबन्धों को वे उत्तर आधुनिकतावादी स्थितियाँ मानते हैं।

उत्तर-आधुनिकता पद बन्ध जॉन बार्थ ने 1967 में कला के संदर्भ में प्रयोग किया। 1974 में पीटर बर्जर तथा ल्योतार ने 1979 में अपने ग्रंथ 'The Post Modern Condition: A

Report on Knowledge' फ्रेडरिक जेमेसन ने अपनी कृतियों 'Post Modernism', The cultural logic of late capitalism' आदि में इस अवधारणा की आधारशिला रखी। ल्योतार ने आधुनिकतावाद से 'महावृत्तांतों' (रामायण, महाभारत, बाइबिल आदि) (Grand Narrative) का संबन्ध माना है। उत्तर आधुनिकतावाद महावृत्तांतों का विरोधी है। नवपूँजीवाद की नाना विकृतियों और नानारूपों से सामाजिक साक्षात्कार उत्तर आधुनिकता है मूल्यहीनता के पक्षधर भी है। वह अनुभावन पर बल देती है। यह व्यक्ति केन्द्रित समीक्षा दृष्टि है। संपूर्णता की धारणा का उत्तर आधुनिकता खण्डन करती है। प्रौद्योगिकी, तकनीकि और सूचना क्रांति ने पूरे विश्व की भौगोलिक सीमाओं को तोडा है और विश्व बाज़ार, विश्व नगर जैसी अवधारणाओं को जन्म दिया है। इसलिए संपूर्णतावादी विचारों का यहाँ खण्डन है। वास्तविक उत्तर आधुनिकता साहित्य-समीक्षा की एक प्रणाली हो सकती है।

पाश्चात्य विचारकों ने खासकर अमेरिकी विचारकों ने उत्तर आधुनिकता के संबन्ध में कई विचार रखे हैं और उन्हें विश्लेषित करने का प्रयास भी किया है। वास्तुकला के क्षेत्र में सर्वप्रथम इस विचारधारा का उन्मेष हुआ। उसमें वास्तुकला की आधुनिकतावादी अंतर्राष्ट्रीय शैली का 'निगोशन' विरोध मिलता है। यह विरोध रॉबर्ट बेंतुरी और जेम्स स्टलिंग ने सर्वप्रथम किया था। परंतु यह भी सत्य है कि वस्तुकला के क्षेत्र में उत्तर आधुनिकता की बात कहकर उसे मृत घोषित किया गया। उसके बाद फ्रांसीसी उत्तर संरचनावादियों से इसे बल प्राप्त हुआ। देल्युज, देरिदा, माइकेल फुको ने जिन उत्तर संरचनावादी स्थितियों को रेखांकित किया वे सब उत्तर आधुनिकतावाद को अनुप्राणित करती है। हिन्दी में मनोहर श्याम जोशी के उपन्यास 'कुरु कुरु स्वाहा', उदयप्रकाश की कहानी 'वारेन हेस्टंग्ज का सांड' आदि में उत्तर आधुनिकता की चर्चा की है। हिन्दी में अब इसकी खूब चर्चा हो रही है।

वस्तुतः वर्तमान तकनीक, प्रौद्योगिकी संचार क्रांति, कंप्यूटरीकरण और नवपूँजीवाद आदि ने मानवचेतना के जिस लघुत्व को रेखांकित किया उसकी प्रतिक्रिया उत्तर आधुनिकतावाद में है जहाँ यथार्थ, इतिहास, तर्क, साहित्य-दर्शन के परम्परित स्वरूप और सौंदर्य- चेतना, मूल्य-चेतना सभी का 'निगेशन' है, अस्वीकृति है।

प्र. 'संरचनावाद' (Structuralism) पर विचार कीजिए।

संरचनावाद की अवधारणा का मूल स्रोत जेनेवा और पेरिस में भाषा विज्ञान के प्रोफसर फर्दिनांद डि सस्यूर (1857-1913) द्वारा प्रतिपादित भाषा-सिद्धांत है। संरचनावाद एक अमूर्त एवं जटिल प्रत्यय है। भाषिकी इसका मूल आधार है। भाषा पर विशेष बल देना, उसकी संरचना को समझना, इकाइयों पर स्वतंत्र रूप से विचार करना, उसके रूप विधान का विश्लेषण-विवेचन करना भाषा साहित्य अध्ययन की जटिल किंतु महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। इसलिए सस्यूर भाषा का अध्ययन भाषा केलिए मानते हैं। भाषा को अलग एवं स्वतंत्र विषय मानकर विचार करने का प्रयास भाषा की संरचना को समझने का उपक्रम है।

संरचना (Structure) एक सावयव या संगतिनिष्ठ साकल्य (Organic whole) के रूप में होती है। वह किसी वस्तु व्यवस्था अथवा साहित्यिक कृति की हो सकती है। यहाँ साहित्यिक कृति के साकल्य का संदर्भ प्रयोज्य है। संरचना की प्रकृति अमूर्त होती है। संरचना का परिज्ञान प्रेक्षण प्रक्रिया द्वारा ही किया जाता है जो दो प्रकार की होती है- भाववादी, विचारवादी अथवा वस्तुवादी। संरचनात्मक सिद्धांत का केन्द्रवर्ती बिन्दु कृति ही ठहरती है कृतिकार अथवा समीक्षक नहीं। संरचनावादी भाषाविद् और शैली वैज्ञानिक वस्तुवादी अवधारणा के पक्षधर है।

संरचना संबन्धी अवधारणा तीन आधारभूत तथ्यों की ओर संकेत करती है- अखण्डता (Wholeness), प्रयोजन (Purpose) और स्वायत्तता (Autonomy)। अखण्डता का संबन्ध आंतरिक संगति से हैं। कृति (रचना) में अपने संघटक (उपांगों) में एक विशिष्ट अन्विति होती है जो विशिष्ट अर्थ देती है। कृति के संघटक तत्वों-शब्द, पदबन्ध, वाक्य संरचना, वाक्य विन्यास आदि में परिवर्तन करने से अर्थ परिवर्तन हो जाता है। संरचना अपनी अर्थवत्ता से जुडी रहती है। यह *प्रयोजन* मूलक प्रकार्य संरचना का संघटक तत्व होता है। यही कारण है कि संरचना का परिवर्तन शब्दार्थ के परिवर्तन का द्योतन करता है। 'संरचना' अपनी सत्ता केलिए किसी की मुखापेक्षी नहीं होती। वह *स्वायत्त* होती है। बाहरी किसी अन्य वस्तु पर आधारित नहीं। वस्तुतः 'संरचनावाद' का मूलाधार प्रसिद्ध भाषाविद् सस्यूर का भाषा संबंधी अध्ययन है।

संरचनावाद का गहरा संबन्ध भाषा से है। सस्यूर के अनुसार भाषा के दो रूप हैं- एक 'ल लांग' तथा दूसरा 'ल परोल'। 'ल लांग' को अन्तर्वेयक्तिक भाषा व्यवस्था कह सकते हैं। 'ल परोल' को व्यक्ति-विशेष की भाषा कहा जा सकता है। दूसरे शब्दों में कहें तो भाषा के दो तत्वों का उल्लेख उन्होंने किया है- परोल और लैंगुई (Language)। परोल, वचन या उच्चार जो भाषा का भौतिक और कार्यकारी पक्ष है। लैंगुइ भाषा का मनोवैज्ञानिक पक्ष है।

इस लैंगुई और परोल (भाषा और वाक्) की प्रक्रिया ही 'संरचना' और संरचनावाद के मूल में है। वाक् के आधार भाषा की तलाश ही संरचना का प्रारूप है। प्रसिद्ध नृतत्ववेत्ता लेवी स्त्रॉस ने इसी सिद्धांत को मिथकों के अध्ययन पर लागू किया। उसके अनुसार मूल मिथक लांग है तो उसके अलग-अलग रूप परोल।

संरचनावाद के अनुसार हमें साहित्यिक कृति को एक विशिष्ट एकता से युक्त संपूर्ण रचना के रूप में देखना चाहिए। यह संपूर्ण संरचना इतनी जटिल होती है कि इसे अंगभूत उपसंरचनाओं- ध्वनि, छन्द, बिंब, पदविन्यास आदि के गुंफ के रूप में देखा जा सकता है। कृति विशेष की जटिल संरचना के विश्लेषण से प्राप्त सिद्धांतों के आधार पर अन्ततः साहित्य मात्र की रचना के मूल सिद्धांतों का अन्वेषण संरचनावाद नृतत्व विज्ञानी क्लॉड

स्ट्रास और रोलाँ बार्थ प्रमुख हैं। इन्होंने सस्यूर की अवधारणा को गहराई और विस्तार दिया। कालान्तर में स्ट्रास, बार्थ, फूको, लाकाँ आदि ने अपने ढंग से संरचनावाद पर विचार किया और एक पूर्ण शास्त्र का दर्जा प्रदान किया। संरचनावाद के सूत्रों को समझाने केलिए रोलाँ बार्थ ने 'द फैशन सिस्टम' नामक पुस्तक लिखी। बार्थ के अनुसार शब्द, पद, वाक्य, मुहावरा आदि से पाठ की संरचना होती है।

वस्तुतः संरचनावाद एक ऐसा वाद है जो लेखकीय अथवा आलोचकीय अनुभव को गौण मानता है और पाठ-निर्माण, पाठ-संरचना में छिपे तथ्यों को उजागर करने का उपक्रम करता है।

प्र. विखंडनवाद (De-constructionalism)/विनिर्मितवाद पर प्रकाश डालिए।

उ. उत्तरसंरचनावाद में भाषा पर अधिक बल है। सस्सूर से दोनों संरचनावादी और उत्तरसंरचनावादी विद्धान अनुप्रभावित है। देरिदा एक सीमा के बाद सस्यूर की मान्यताओं को पलट देता है और एक नई पद्धति का उल्लेख करता है, जिसे विर्निमति या विखंडन कहा गया है। सस्यूर की मान्यता है कि भाषा में जो अप्रस्तुत या अनुपस्थित है जो अमूर्त और अदृश्य है वही भाषा की गहन संरचना (deep structure) कही जा सकती है। अतः समीक्षक द्वारा इस अदृश्य या अनुपस्थित को खोजने की प्रक्रिया ट्रेस है। सारा बल पाठ पर दिया जाता है। पाठ की (Text) सामान्य और गहन संरचना में ही सब कुछ निहित है। समीक्षा पाठ केन्द्रित ही होती है। देरिदा ने इसी पाठ के डिकांस्ट्रक्शन (विखंडन) की बात कही और डिकांस्ट्रटिव विखंडित पाठ की वकालत की किन्तु वह भी पाठ को ही केन्द्र में रखकर विनिर्मित की बात को आगे बढ़ाता है। मूलतः समीक्षक का काम उपस्थिति में अनुपस्थित की तलाश है जो ट्रेस और डिकांस्ट्रक्शन से संभव होती है। पाठ की गहन संरचना में निहित संवदन/अर्थादि की खोज विखण्डन के द्वारा ही संभव है। आलोचना की पद्धति, उसकी प्रक्रिया, उसके प्रतिमान हमें 'टैक्सट' में खोजने चाहिए।

देरिदा के अनुसार विखण्डन परम्परावादी दर्शन/प्रतिमान/विचारधारा का निषेध करता है। साहित्य-समीक्षा के साथ दर्शन, नृविज्ञान तथा सभी मानविकी के अनुशासन देरिदा केलिए विखंडन की वस्तु है। पॉल डी मन ने 'ब्लाइंडनैस एण्ड इन साइट' (Blindness and Insight) में पाश्चात्य जगत् की नई समीक्षा का ही विखंडन कर दिया जो स्वयं में एक पाठ केन्द्रित रूपवादी समीक्षा आन्दोलन है। उसके अनुसार कृति की टैक्सट व्याख्याकार अथवा समीक्षक का स्वयं का निर्माण है। एक ऐसा समीक्षक रूपाकार जो स्वयं एक कहानी है। इस तरह विखंडनवाद साहित्य (पाठ) और समीक्षा में कोई भेद नहीं मानता। विखंडनवाद की दृष्टि में न रचना (पाठ) बडी है और न समीक्षा। दोनों रचनाएँ हैं। दोनों के अनुभव पाठ केन्द्रित ही होते हैं। इन जीवनानुभवों को सर्जक, समीक्षक और पाठक अलग-अलग ढंग, से रूपाकार देते हैं। सब बराबर है।

देरिदा 'विखंडन' को एक प्रकार की भाषायी रणनीति मानते हैं। यह एक प्रकार 'क्लोज़ स्टडी' है। गहन अध्ययन की कार्यवाही है। देरिदा के विखंडन में संरचनावाद से साम्य है और वैषम्य भी। पाठ के क्षेत्र में लेखक की स्वतंत्रता पर इन्होंने भी बले दिया। जब संरचना स्वयं की भाषा में ही कैद न रहकर विखंडित होकर अनेकार्थकता का द्योतन करती है तब वह विखंडन है। विखंडनवाद के अनुसार एक ही पाठ की दो व्याख्याएँ हो सकती हैं और अनेक भी। सत्य का अनुसंधान मात्र देवताओं और दार्शनिक प्रत्ययों में हीं नहीं पागलों, दलितों, स्त्रियों और पशुओं में भी हो सकता है। हर चीज़ के 2 अर्थ हो सकते हैं। अर्थ का निर्णायक अब लेखक नहीं पाठ का पाठक है, और उसके पढ़ने की पद्धति है।

वस्तुतः विखंडन 'पाठ' को और लेखन को नये ढंग से समझने की प्रक्रिया है। यह न कोई पूर्व निर्धारित विमर्श का विषय है न विध्वंस। 'पाठ' की तत्कालिक समझ है। विखंडन के अनुसार प्रत्येक पाठ पढ़ने पर एक अधूरा पाठ होता है अर्थात् पढ़ने पर पूरे अर्थ का द्योतन नहीं करता है। यह एक प्रकार पूर्ण पठन-पाठन नहीं वरन् एक गलत पाठन है। अतः हर बार पढने पर वह नया होता है और नये अर्थों को उद्घाटित करता है। 'पाठ' का कोई पठन स्थायी और अंतिम नहीं होता, वरन् तात्कालिक होता है। विखंडन की प्रक्रिया 'पाठ' के दोहराने, बिखराने और कई बार प्रतिरोपण द्वारा संपन्न की जाती है। इस तरह देरिदा 'पाठ' (टैक्सट) के बाहर कुछ नहीं मानते और सिद्धांतवादी समीक्षा को नकारते हैं।